ISSN: 2395-7852

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 3, May 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

जयशंकर प्रसाद की कालजयी रचना "कामायनी" महाकाव्य में व्यक्त दार्शनिक चिंतन एवं जीवन संदेश का वैशिष्ट्य

Anju Sharma

Assistant Professor in Dept. of Hindi, Shahid Captain Ripudaman Singh Govt. College, Sawai Madhopur, Rajasthan, India

सार

कामायनी हिंदी भाषा का एक महाकाव्य है। इसके रचयिता जयशंकर प्रसाद हैं। यह आधुनिक छायावादी युग का सर्वोत्तम और प्रतिनिधि हिंदी महाकाव्य है। 'प्रसाद' जी की यह अंतिम काव्य रचना 1936 ई. में प्रकाशित हुई, परंतु इसका प्रणयन प्राय: 7-8 वर्ष पूर्व ही प्रारंभ हो गया था। 'चिंता' से प्रारंभ कर 'आनंद' तक 15 सर्गों के इस महाकाव्य में मानव मन की विविध अंतर्वृत्तियों का क्रमिक उन्मीलन इस कौशल से किया गया है कि मानव सृष्टि के आदि से अब तक के जीवन के मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक विकास का इतिहास भी स्पष्ट हो जाता है।कला की दृष्टि से कामायनी, छायावादी काव्यकला का सर्वोत्तम प्रतीक माना जा सकता है। चित्तवृत्तियों का कथानक के पात्र के रूप में अवतरण इस महाकाव्य की अन्यतम विशेषता है। और इस दृष्टि से लज्जा, सौंदर्य, श्रद्धा और इड़ा का मानव रूप में अवतरण हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है। कामायनी प्रत्यभिज्ञा दर्शन पर आधारित है। साथ ही इस पर अरविन्द दर्शन और गांधी दर्शन का भी प्रभाव यत्र तत्र मिल जाता है। साहित्य में दर्शन को घोलकर लिखने वाले छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद ने 'छायावाद का उपनिषद' के उपनाम से मशहूर अपनी पुस्तक 'कामायनी' में मुख्यतः 'शतपथ ब्राह्मण' से ली गई 'मनु' की मिथकीय प्रस्तुत कथा के साथ ही इसके समानांतर 'मानव मन' की एक अप्रस्तुत कथा को भी गतिशील बनाए रखा है तथा इसमें निहित मिथक और इतिहास को अपने कल्पना के रंगों से सजाते हुए 'मानव मन' और 'मानवता' के विकास की कहानी प्रस्तुत की है और प्रसाद ने इसमें मानवीय समस्याओं का जो समाधान पक्ष बताया है, उस कारण हिंदी साहित्य का यह इकलौता भाव-प्रधान महाकाव्य देश-काल की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए अपनी प्रासंगिकता हमेशा बनाए रखने में सक्षम रहेगा।

परिचय

मानव के अग्रजन्मा देव निश्चिंत जाति के जीव थे। किसी भी प्रकार की चिंता न होने के कारण वे 'चिर-किशोर-वय' तथा 'नित्यविलासी' देव आत्म-मंगल-उपासना में ही विभोर रहते थे। प्रकृति यह अतिचार सहन न कर सकी और उसने अपना प्रतिशोध लिया। भीषण जलप्लावन के परिणामस्वरूप देवसृष्टि का विनाश हुआ, केवल मनु जीवित बचे। देवसृष्टि के विध्वंस पर जिस मानव जाति का विकास हुआ उसके मूल में थी 'चिंता', जिसके कारण वह जरा और मृत्यु का अनुभव करने को बाध्य हुई। चिंता के अतिरिक्त मनु में दैवी और आसुरी वृत्तियों का भी संघर्ष चल रहा था[1] जिसके कारण उनमें एक ओर आशा, श्रद्धा, लज्जा और इड़ा का आविर्भाव हुआ तो दूसरी ओर कामवासना, ईर्षा और संघर्ष की भी भावना जगी। इन विरोधी वृत्तियों के निरंतर घात-प्रतिघात से मनु में निर्वेद जगा और श्रद्धा के पथप्रदर्शन से यही निर्वेद क्रमश: दर्शन और रहस्य का ज्ञान प्राप्त कर अंत में आंनद की उपलब्धि का कारण बना। यह चिंता से आनंद तक मानव के मनौवैज्ञानिक विकास का क्रम है। साथ ही मानव के आखेटक रूप में प्रारंभ कर श्रद्धा के प्रभाव से पशुपालन, कृषक जीवन और इड़ा के सहयोग से सामाजिक और औद्योगिक क्रांति के रूप में भौतिक विकास एवं अंत में आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति का उद्योग मानव के सांस्कृतिक विकास के विविध सोपान हैं। इस प्रकार कामायनी मानव जाति के उद्भव और विकास की कहानी है।प्रसाद ने इस काव्य के प्रधान पात्र 'मनु' और कामपुत्री कामायनी 'श्रद्धा' को ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में माना है, साथ ही जलप्लावन की घटना को भी एक ऐतिहासिक तथ्य स्वीकार किया है। शतपथ ब्राह्मण के प्रथम कांड के आठवें अध्याय से जलप्लावन संबंधी उल्लेखों का संकलन कर प्रसाद ने इस काव्य का कथानक निर्मित किया है, साथ ही उपनिषद् और पुराणों में मनु और श्रद्धा का जो रूपक दिया गया है, उन्होंने उसे भी अस्वीकार नहीं किया, वरन् कथानक को ऐसा स्वरूप प्रदान किया जिसमें मनु, श्रद्धा और इड़ा के रूपक की भी संगति भली भाँति बैठ जाए। परंतु सूक्ष्म सृष्टि से देखने पर जान पड़ता है कि इन चरित्रों के रूपक का निर्वाह ही अधिक सुंदर और सुसंयत रूप में हुआ, ऐतिहासिक व्यक्ति के रूप में वे पूर्णत: एकांगी और व्यक्तित्वहीन हो गए हैं।मनु मन के समान ही अस्थिरमति हैं[2]। पहले श्रद्धा की प्रेरणा से वे तपस्वी जीवन त्याग कर प्रेम और प्रणय का मार्ग ग्रहण करते हैं, फिर असुर पुरोहित आकुलि और किलात के बहकावे में आकर

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

हिंसावृत्ति और स्वेच्छाचरण के वशीभूत हो श्रद्धा का सुख-साधन-निवास छोड़ झंझा समीर की भाँति भटकते हुए सारस्वत प्रदेश में पहुँचते हैं; श्रद्धा के प्रति मनु के दुर्व्यवहार से क्षुब्ध काम का अभिशाप सुन हताश हो किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं और इड़ा के संसर्ग से बुद्धि की शरण में जा भौतिक विकास का मार्ग अपनाते हैं। वहाँ भी संयम के अभाव के कारण इड़ा पर अत्याचार कर बैठते हैं और प्रजा से उनका संघर्ष होता है। इस संघर्ष में पराजित और प्रकृति के रुद्र प्रकोप से विक्षुब्ध मनु जीवन से विरक्त हो पलायन कर जाते हैं और अंत में श्रद्धा के पथप्रदर्शन में उसका अनुसरण करते हुए आध्यात्मिक आनंद प्राप्त करते हैं। इस प्रकार श्रद्धा—आस्तिक्य भाव—तथा इड़ा—बौद्धिक क्षमता—का मनु के मन पर जो प्रभाव पड़ता है उसका सुंदर विश्लेषण इस काव्य में मिलता है।[3]

पहला सर्ग चिंता सर्ग है, इसमें बताया गया है कि देव सभ्यता विलासिता की अति के फलस्वरूप जल-प्रलय के कारण नष्ट हो गई है और मनु अकेले बचे हैं। अतः चिंतित है। इसके बाद आशा, श्रद्धा, काम,वासना और लज्जा सर्ग है। इन सर्गों में मुख्यतः मनु की गंधर्व देश की कन्या श्रद्धा से मुलाकात और इनके बीच संयोग-शृंगार का विस्तृत वर्णन है। इसके बाद कर्म और ईष्या सर्ग में मनु हिंसा की तरफ उन्मुख होता है।

अगला सर्ग है - इड़ा सर्ग। इसमें मनु की मुलाकात इड़ा से होती है, जो कि तार्किक बुद्धि से सम्पन्न नारी है। इसके बाद स्वप्न सर्ग में श्रद्धा के विरह को और संघर्ष सर्ग में मनु द्वारा इड़ा पर जबदस्ती अधिकार प्राप्त की चेष्टा के कारण मनु और इड़ा की प्रजा में संघर्ष को दिखाया गया है। इसके बाद निर्वेद और दर्शन सर्ग में श्रद्धा और मनु का पुनर्मिलन हुआ है। तत्पश्चात रहस्य सर्ग में जीवन की विषमता और उसके समाधान पक्ष को बताया गया है। अंतिम सर्ग आनंद सर्ग है, जिसमें मनु की सभी विषमताएँ समाप्त हो गई हैं और मनु आनंदवाद की स्थिति में पहुँच चुके हैं[4]

यदि बात करें कामायनी में निहित दर्शन की तो हम पाते हैं कि प्रसाद ने इसमें अनेक भारतीय और पश्चिमी दर्शनों का संश्लेषण किया है , यही कारण है कि इसे 'छायावाद के उपनिषद' की संज्ञा से नवाजा गया है। इसमें गांधीवादी दर्शन के हृदय परिवर्तन, फ्रॉयड के मनोविश्लेषणवादी दर्शन के लिविडो और मार्क्स के वर्ग-संघर्ष आदि दर्शनों का प्रभाव है लेकिन इसमें निहित मूल दर्शन है - प्रत्यभिज्ञा दर्शन है, जिसे शैवाद्वैतवाद या त्रिक या स्पन्द या आनंदवाद भी कहते हैं। तो आइए पहले संक्षिप्त में देखते प्रत्यभिज्ञा दर्शन को। इसके बाद विश्लेषण करेंगे कि किन स्तरों पर कामायनी में प्रत्यभिज्ञा दर्शन उपस्थित है।

प्रत्यभिज्ञा दर्शन एक शैव दर्शन है, जिसकी शुरुआत कश्मीर से नवीं शताब्दी के आस-पास मानी जाती है। सरल शब्दों में कहें तो प्रत्यभिज्ञा का अर्थ है - पहले से देखे हुए को पहचानना या फिर से जानना। इस दर्शन के अनुसार जीव पहले शिव था लेकिन कंचुक(मल) के आवरण के कारण जीव अपनी पहचान से दूर रहता है। जीव द्वारा अपने स्वरूप को पुनः पहचान कर शिवत्व की प्राप्ति करना ही प्रत्यभिज्ञा है।इस दर्शन के अनुसार विश्व मिथ्या न होकर यथार्थ है और यह शिव की इच्छा की अभिव्यक्ति है। विश्व कोई नई रचना नहीं है बल्कि पहले से ही विद्यमान वस्तु का प्रकटीकरण है। बताते चलें कि इस दर्शन में शिव को स्वतंत्र सत्ता माना गया है और इसके पाँच कृत्य बताए गए हैं - सृष्टि, स्थिति, संहार,तिरोधान और अनुग्रह। सृष्टि का निर्माण शिव से ही हुआ है और यह शिव में ही विलीन हो जाती है।ग़ौरतलब है कि जब जीव अपने आप को पुनः पहचान लेता है तो शिव और जीव में भेद समाप्त हो जाता है और आनंद की स्थिति उत्पन्न होती है। अंततः इस आनंद की स्थिति में समरसता की प्राप्ति होती है।[6] समरसता का सामान्य अर्थ यह है कि इस स्थिति में सभी द्वंद्व समाप्त हो जाते हैं और आत्मा परमात्मा को प्राप्त होकर एक रूप हो जाती है। यह दर्शन शंकर के अद्वैतवाद से कई स्तरों पर भिन्न है, जैसे शंकर ने जगत को मिथ्या माना है लेकिन यहाँ पर जगत को यथार्थ माना गया है।उल्लेखनीय है कि समरसता की अवस्था तक पहुँचने में जीव को पाँच कोशों क्रमशः अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय और तीन स्थितियों क्रमशः आणव, शाक्त और शाम्भव से गुजरना पड़ता है। जब समरसता, आनंदमय कोश और शाम्भव स्थिति तीनों की प्राप्ति होती है, तभी चरम आनंदवाद की उपलब्धि होती है।उपर्युक्त विवरण प्रत्यभिज्ञा दर्शन के सैद्धांतिक पक्ष का है। अब आइए देखते हैं इस दर्शन के व्यावहारिक रूप को जो कामायनी में वर्णित है।[5]

कामायनी का पहला सर्ग चिंता सर्ग है और अंतिम आनंद सर्ग। अतः कामायनी की कथा चिंता से समरसता या आनंद तक पहुँचने का मार्ग दिखाती है। सर्वप्रथम देखते हैं कि समरसता का अभाव क्यों है ? प्रसाद के अनुसार इसका कारण है विषमता। विषमता की स्थिति में जीवन दुखमय, चिंतामय और अवसादयुक्त रहता है और अभिशाप के समान प्रतीत होता है।अब देखते हैं कि विषमता है क्यों ? प्रसाद जी के अनुसार विषमता का मूल कारण है - ज्ञान, इच्छा और क्रिया में समन्वय का अभाव।[7]

"ज्ञान दूर कुछ क्रिया भिन्न है,

इच्छा क्यों पूरी हो मन की

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

एक दूसरे से मिल न सकें,

यह विडंबना है जीवन की।"

लेकिन साथ ही जीवन को गतिशील बनाए रखने के लिए विषमता आवश्यक भी है क्योंकि सुख के महत्त्व को समझने के लिए दुख से गुज़रना भी जरूरी है। प्रसाद लिखते हैं -

" जिसे तुम समझ रहे हो अभिशाप,

जगत की ज्वालाओं का मूल

ईश का यह रहस्य वरदान[8]

कभी मत जाओ इसको भूल।"

प्रसाद के अनुसार विषमता को दूर करने के लिए जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समरसता आवश्यक है। कोरी भावुकता और कोरी बौद्धिकता से समरसता संभव नहीं है। बताते चलें कि कामायनी की 'श्रद्धा' भावुकता का प्रतीक है और 'इड़ा' बौद्धिकता का। मनु जब श्रद्धा के साथ रहता है तो उसमें तार्किकता का अभाव है और जब इड़ा के साथ रहता है तो वहाँ भावुकता का अभाव है। कामायनी में इन दोनों में समन्वय दिखाया गया है। श्रद्धा अपने पुत्र 'मानव' को इड़ा को सौंप देती है , जिससे 'मानव' में भावुकता के साथ ही तार्किकता का भी विकास हो सके और उसमें एक संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण हो सके।कामायनी के अंतिम सर्ग आनन्द सर्ग में प्रसाद ने यह बताने का प्रयास किया है कि आनंद की अवस्था तक कैसे पहुँचा जाए। प्रसाद के अनुसार आंतरिक समन्वय के माध्यम से विषमता की समाप्ति की जा सकती है और आनंद या समरसता स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है। मनु श्रद्धा की सहायता से आंतरिक मनोविकारों से लड़ते हुए आन्तरिक समन्वय के माध्यम से आनंद को प्राप्त करता है। इसी आंतरिक समन्वय से समरसता की स्थिति प्राप्त हुई है। इस संबंध में प्रसाद लिखते हैं[9]

"समरस थे जड़ या चेतन, सुंदर साकार बना था।

चेतनता एक विलसती, आनंद अखंड घना था॥"

यदि कामायनी में जगत की स्थिति की बात करें प्रसाद ने लिखा है कि

"काम मंगल से मंडित श्रेय

सर्ग इच्छा का है परिणाम"

इस जगत में सुख-दुःख और विषमताएँ ईश्वर का रहस्यमय वरदान हैं। शिव(महाचिति) सत्य है। जगत महाचिति की अभिव्यक्ति है , अतः जगत भी सत्य है।

"अपने दुख-सुख से पुलकित,

यह मूर्त विश्व सचराचर

'चिति' का विराट वपु मंगल,

यह सत्य, सतत, चिर सुंदर।"

प्रसाद ने यह भी लिखा है कि महाचिति लीलामय और मंगलमय है, इसलिए जगत भी मंगलमय है

"कर रही लीलामय आनंद

महाचिति सजग हुई सी व्यक्त।

विश्व का उन्मीलन अभिराम,

इसी में सब होते अनुरक्त।"

अतः उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कालजयी रचना 'कामायनी' का मूल दर्शन 'प्रत्यभिज्ञा दर्शन' है। इसमें मनुष्य की मूल समस्या 'विषमता' है और इस समस्या का समाधान यह है कि मनुष्य 'समरसता' की स्थिति में पहुँचे। कामायनी की प्रासंगिकता प्रसाद के इन शब्दों में निहित है कि यदि विश्व के सभी मनुष्य समरसता अपना लें तो यहाँ कोई पापी नहीं होगा, कोई किसी की सेवा को पराई नहीं समझेगा और जीवन वसुधा समतल हो जाएगी[10] -

"शापित ना यहाँ है कोई, तापित पापी ना यहाँ है।

जीवन वसुधा समतल है, समरस है ज्यों कि जहाँ है"

वर्तमान उपभोक्तावादी दौर में जीवन में आनंद की स्थापना करने हेतु प्रसाद का निम्न विचार सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत होता है -

"औरों को हँसते देख मनु

हँसो और सुख पाओ

अपने सुख को विस्तृत कर लो

सब को सुखी बनाओ"[11]

विचार-विमर्श

कामायनी १५ सर्ग (अध्यायों) का महाकाव्य है। ये सर्ग निम्नलिखित हैं-

1. चिन्ता 2. आशा 3. श्रद्धा 4. काम 5. वासना 6. लज्जा 7. कर्म 8. ईर्ष्या 9. इड़ा (तर्क, बुद्धि) 10. स्वप्न 11. संघर्ष 12. निर्वेद (त्याग) 13. दर्शन 14. रहस्य 15. आनन्द।सूत्र :- (१) चिंता की आशा से श्रद्धा ने काम वासना को लज्जित किया। (२) कर्म की ईर्ष्या से बुद्धि/तर्क ने स्वप्न में संघर्ष किया। (३) निदरआ (निद्रा)/ मोह माया का त्याग कर ईश्वरीय दर्शन द्वारा रहस्यमय आनंद की प्राप्ति होगी। इसमें संदेह नहीं कि प्रसाद का छायावाद-युग में होना महत्वपूर्ण है। पर प्रसाद की निजी साहित्यिक या काव्यात्मक विशेषताओं के साथ उपस्थिति भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। हम दोनों ही दृष्टियों से प्रसाद को पढ़ेंगे। पर पद्धति हमारी यह होगी कि हम प्रसाद की कविता के साक्ष्य पर ही उन युगीन विशेषताओं को भी समझने की कोशिश करें, जिन्हें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। 'प्रेम पथिक ' (1910) से 'कामायनी ' तक प्रसाद का काव्य विकास हमारी दृष्टि में होना चाहिए। 'कानन कुसुम', 'चित्राधार', 'झरना', 'आँसू', 'लहर' बीच की कृतियाँ हैं। 'झरना' का प्रथम प्रकाशन 1910 में हुआ। इसमें संकलित 'झरना' कविता की निम्नलिखित पंक्तियाँ 'छायावाद' के आरंभिक स्वरूप की संकेतक हैं :[12]

'बात कुछ छिपी हुई है गहरी
मधुर है स्रोत, मधुर है लहरी
इस इकाई में हम प्रसाद की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक भावबोध को समझने का प्रयास करेंगे। यहाँ हम न भूलें कि छायावादी भाषा और शिल्प की नयी विशेषताएँ आधुनिक भावबोध से संभव हुई हैं और यह आधुनिक भावबोध एक विशेष युग-चेतना से संबद्ध है।

छायावाद को नवजागरण की अभिव्यक्ति कहा जाता है। इस नवजागरण के पीछे राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना सक्रिय थी। छायावाद कई बार प्रकृति के नवीन संवेदनात्मक चित्रों के सहारे पहचाना और सराहा गया है। प्रसाद ने भी प्रकृति को विश्वात्मा की छाया या प्रतिबिम्ब कहा था और उसे छायावाद का खास संदर्भ बताया था। पर उन्होंने यह भी कहा था कि सिर्फ प्रकृति-संवेदना के नए स्पर्श वाली कविताएँ छायावाद नहीं हैं। इस दृष्टि से ज़रूरी है कि हम छायावाद-युग की काव्यगत नवीनता को राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक भावबोध की दृष्टि से देखें। यहाँ अध्ययन के लिए यह दृष्टि महत्वपूर्ण होगी। पद्धति यह होगी कि हम प्रसाद की विशेषताओं को उनकी कविताओं के संदर्भ में देखें और सामान्यीकरण से बचें।[13]

1916 से 1936 तक बीस वर्षों का समय छायावाद युग है। दो महायुद्धों के बीच की हिंदी कविता के रूप में भी छायावाद का अध्ययन किया जा सकता है। लेकिन छायावाद का मूल उत्स भारतीय स्वाधीनता संघर्ष में है। स्वाधीनता की चेतना का ही परिणाम है — कल्पना पर अधिक बल। यह तथ्य ध्यान आकृष्ट करने वाला है कि हिंदी कविता में छायावाद और भारतीय राजनीतिक मंच पर महात्मा गांधी का आगमन लगभग एक ही साथ हुआ था। इसी स्थिति ने डॉ0 नगेन्द्र जैसे आलोचक को यह कहने का आधार प्रस्तुत किया होगा कि 'जिन परिस्थितियों ने हमारे दर्शन और कर्म को अंहिसा की ओर प्रेरित किया, उन्होंने ही भाव (सौंदर्य) वृत्ति को छायावाद की ओर।' इसका यह अर्थ नहीं है कि छायावाद और गांधी जी की जीवन दृष्टि समान है या स्वाधीनता संघर्ष में जो भूमिका गांधी की थी, वही छायावाद की हिंदी काव्य के संदर्भ में है। लेकिन स्वाधीनता के संदर्भ में छायावाद और गांधी — दोनों की परिकल्पना उस दौर में लगभग एक समान कही जा सकती है। स्वाधीन चेतना, सूक्ष्म कल्पना, लाक्षणिकता, नए प्रकार का सादृश्य-विधान, नया सौंदर्यबोध – इन विशेषताओं को एक साथ प्रसाद की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना और नवीन भावबोध के आधार पर समझने की ज़रूरत होगी। प्रसाद को पढ़ते हुए आपका ध्यान प्रायः इन्हीं विशेषताओं की ओर जाएगा।

आरंभ में ही यह स्पष्टीकरण ज़रूरी है कि प्रसाद उस अर्थ में राष्ट्रीयता या राष्ट्रीय चेतना के कवि नहीं है, जिस अर्थ में माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और सुभद्रा कुमारी चौहान हैं। प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना अधिक स्पष्ट रूप में उनके नाटकों में व्यक्त हुई है। प्रसाद की अपनी पहचान के आधार पर छायावाद को 'राष्ट्रीय काव्य' नहीं कहा जाता। यहाँ यह भ्रम नहीं होना चाहिए कि राष्ट्रीय काव्य का महत्व कम है। सचाई यह है कि छायावादी काव्य में राष्ट्रीय जागरण, सांस्कृतिक जागरण के रूप में आता है। इस सांस्कृतिक जागरण की अभिव्यक्ति प्रसाद की 'प्रथम प्रभात', 'अब जागो जीवन के प्रभात', 'बीती विभावरी जाग री' आदि कविताओं में है। इसकी अभिव्यक्ति हम पंत, निराला और महादेवी के यहाँ भी देख सकते हैं। निराला की 'जागो फिर एक बार', पंत की 'प्रथम रश्मि', की 'जाग तुझको दूर जाना' – जैसी कविताएँ इस दृष्टि से विचारणीय हैं। 'लहर' में संकलित प्रसाद की कविता 'अब जागो जीवन के प्रभात ' पर विचार करें तो प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना स्वच्छन्दतावाद की मूल चेतना से अभिन्न जान पड़ेगी :

अब जागो जीवन के प्रभात।

वसुधा पर ओस बने बिखरे
हिमकन आँसू जो क्षोभ भरे
ऊषा बटोरती अरूण गात।[14]

छायावाद युग में लिखी कविताओं में नवजागरण के संकेत अधिक महत्वपूर्ण हैं। नवजागरण की इस भावना में एक नए मनुष्य की परिकल्पना दिखाई देती है। प्रसाद यदि छायावाद के मूल में स्वानुभूति की विशिष्टता पर बल देते हैं तो इसके पीछे भी स्वाधीन मनुष्य की कल्पना है। निराला जब कहते हैं – मैंने 'मैं' शैली अपनाई – तो इसी स्वाधीन चेतना को अभिव्यक्ति देते हैं। अब ऐतिहासिक दृष्टि से हम यह अंतर समझ लें कि भारतेन्दु काल में राष्ट्रीयता की जो भावना अस्पष्ट थी, अमूर्त थी, उसने द्विवेदी युग तक आते-आते स्वच्छन्दतावाद के परिप्रेक्ष्य में एक नए राष्ट्रीय आदर्शवाद का रूप ले लिया और उसी के प्रभाव में छायावाद में एक नयी मानव परिकल्पना सामने आई। इस दृष्टि से राजनीतिक परिदृश्य में तिलक की भूमिका पर विचार करें।

जब वे कांग्रेस के सिद्धांतों की व्याख्या करते हुए प्राचीन दार्शनिक मान्यताओं का परीक्षण कर रहे थे और गीता का आधुनिक भाष्य रच रहे थे, तो उसके पीछे यही नवीन राष्ट्रीय चेतना या राष्ट्रीय भावना थी। कर्म सिद्धांत की उनकी व्याख्या 'कामायनी' में व्यक्त ज्ञान, इच्छा और क्रिया के पारस्परिक संबंध से तुलनीय है। 1919 में तिलक का स्थान गांधी ने लिया तो स्वतंत्रता का एक नया संदेश जनता तक पहुँचा। राष्ट्रीय भावना की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति नए रूपों में दिखाई देने लगी। छायावाद-युग के संदर्भ में राष्ट्रीयता या राष्ट्रीय चेतना के सांस्कृतिक पक्ष पर बल देना आवश्यक है। हम आपका ध्यान इस अंतर की ओर ज़रूर आकृष्ट करना चाहेंगे कि यह राष्ट्रीय चेतना सीमित अर्थ में राष्ट्रवाद नहीं है।[15]

अभी तक के विश्लेषण पर ध्यान दें तो लगेगा कि हम राष्ट्रीय चेतना को छायावाद में एक सांस्कृतिक चेतना के रूप में ही देख रहे थे। इसीलिए हमने छायावाद को 'शक्तिकाव्य' कहने की सार्थकता स्पष्ट की। छायावाद की भावभूमि को गांधीवाद से जितनी प्रेरणा और स्फूर्ति

मिली, उससे कम रवीन्द्रनाथ से नहीं मिली। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तो मानते ही हैं कि छायावाद बंगाल की भावभूमि का स्पर्श लेकर ही हिंदी में आया। उनकी इस व्याख्या को ध्यान में रखें – 'इस रूपात्मक आभास को योरोप में छाया (Phantasmala) कहते थे। इसी से बंगाल में ब्रह्म समाज के बीच उक्त वाणी के अनुकरण पर जो आध्यात्मिक गीत या भजन बनते थे वे 'छायावाद' कहलाने लगे| धीरे-धीरे यह शब्द धार्मिक क्षेत्र से वहाँ के साहित्यिक क्षेत्र में आया और फिर रवीन्द्र बाबू की धूम मचने पर हिंदी के साहित्य-क्षेत्र में भी प्रकट हुआ। यह बात शुक्ल जी ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' (पृ0 453) में कही है और इससे उनके छायावाद-संबंधी आरंभिक पूर्वग्रह का भी पता चलता है। बहुत दिनों तक शुक्ल जी छायावादी काव्य को सीमित अर्थ में 'मधुचर्या' कहते रहे। छायावाद की अर्थभूमि उन्हें बहुत सीमित जान पड़ती थी। छायावाद के पीछे राष्ट्रीय-सांस्कृतिक चेतना की प्रेरणा भी काम कर रही थी, यह आरंभ में वे देख न सके थे। निराला की कृति 'तुलसीदास', 'राम की शक्तिपूजा', प्रसाद की 'कामायनी' से परिचित होने के बाद उन्होंने अपनी धारणा बदल ली थी।
यह बात ध्यान में रखें कि रवीन्द्रनाथ ने छायावाद को उस तरह प्रभावित नहीं किया, जैसा कि शुक्ल जी बताते हैं। रवीन्द्रनाथ के सांस्कृतिक चिंतन और कलाविवेक ने छायावाद को प्रभावित किया।

कलाओं का अंतःसंबंध रवीन्द्रनाथ की सांस्कृतिक दृष्टि का आवश्यक पक्ष था। कल्पना किस तरह अनुभव और भाषा के नए साहचर्य विकसित करती है, यह रवीन्द्रनाथ में स्पष्ट था। पंत जैसे कवि इसी अर्थ में रवीन्द्रनाथ का प्रभाव स्वीकार करते हैं। रवीन्द्रनाथ के लिए राष्ट्रीयता विश्वदृष्टि से जुड़कर एक सम्यक सांस्कृतिक चेतना बनती है। इस दृष्टि से प्रसाद भी विश्व मंगल की कल्पना करते देखे जाते हैं। 'कामायनी' में मनु 'विराट' के प्रति ऐसी जिज्ञासा प्रकट करते हैं :[16]

वह विराट था हमें घोलता
नया रंग भरने को आज
कौन? हुआ यह प्रश्न अचानक
और कुतूहल का था राज

प्रसाद का निबंध 'यथार्थवाद और छायावाद' पंत की 'पल्लव' की भूमिका और निराला की 'परिमल' की भूमिका से छायावादी कवियों के आधुनिकता-बोध का स्पष्ट पता लगने के साथ ही बदली हुई कवि-दृष्टि या काव्य-दृष्टि का भी पता लग जाता है। प्रसाद अपने निबंध में कहते हैं, 'छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौंदर्यमय प्रतीक-विधान तथा उपचार वक्रता के साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएँ हैं। अपने भीतर से मोती के पानी की तरह आंतर स्पर्श करके भाव समर्पण करने वाली अभिव्यक्ति छाया कांतिमयी होती है।' इस परिभाषा से लगेगा कि सारा बल भाषा की विलक्षणता और नवीनता पर है। पर ध्यान से देखें तो बल आंतरिकता के नए स्पर्श और नए सौंदर्यबोध पर भी है।

'पल्लव' की भूमिका में जहाँ पंत रीतिकाल के प्रभाव में लिखी गयी ब्रजभाषा कविता और उसमें निहित मध्यकालीन संवेदना की हँसी उड़ा रहे थे, वहीं खड़ी बोली की नयी कविता अर्थात छायावादी कविता के आधुनिक बोध और बदली हुई काव्य-दृष्टि को महत्व दे रहे थे। वे लिरिकल बैलेड्स के भूमिकालेखक वर्ड्सवर्थ की तरह पुस्तकों की भाषा की जगह मनुष्यों की भाषा को महत्व दे रहे थे। वे छायावाद में 'नए हाथों का प्रयत्न, जीवित साँसों का स्पन्दन, आधुनिक इच्छाओं के अंकुर, वर्तमान के पदचिह्न, भूत की चेतावनी, भविष्य की आशा, नवीन युग की नवीन दृष्टि' देख रहे थे। वे कह रहे थे 'उसमें नए कटाक्ष, नए रोमांच, नए स्वप्न, नया हास, नया रुदन, नवीन हृत्कम्प, नवीन वसंत, नवीन कोकिलाओं का गान है।' ये संकेत मध्यकालीन सौंदर्यबोध से आधुनिक सौंदर्यबोध की भिन्नता और विशिष्टता को समझने में सहायक हो सकते हैं।[17]

अब देखें, निराला की 'परिमल' की भूमिका – जिसमें कविता की मुक्ति को मनुष्यों की मुक्ति के समकक्ष कहा गया है। निराला व्याख्या करते हैं – मनुष्यों की मुक्ति कर्मों के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छंदों के शासन से अलग हो जाना। आगे उन्हीं के शब्द हैं – 'मुक्त काव्य कभी साहित्य के लिए अनर्थकारी नहीं होता। प्रत्युत उससे साहित्य में एक प्रकार की स्वाधीन चेतना फैलती हैं जो साहित्य के कल्याण की ही मूल होती है।'
कहने की आवश्यकता नहीं कि छायावादी कवियों ने नया सौंदर्यबोध विकसित किया, नयी संबंध भावना की खोज की। रीतिकालीन कवियों ने नख-शिख वर्णन की जो रूढ़ियाँ बनायी थीं, उनसे हटकर उन्होंने नयी आधुनिक स्त्री का चित्र सामने रखा। 'कामायनी' में श्रद्धा का रूप चित्रण वायवी ज़रूर है पर एक नयी छवि का संकेत है। पंत की कविता में एक ही पंक्ति में स्त्री को – 'देवी माँ सहचरि प्राण' कहा गया है। जहाँ भूविलास पर ही ध्यान जाता है, कटाक्ष में कुटिलता ही देखी जाती रही है वहाँ छायावादी कवि पंत के लिए – 'करूण भौहों में था आकाश' – सौंदर्य की यह नयी दृष्टि है। स्त्री शिक्षा का प्रसार, स्वाधीनता संघर्ष में स्त्रियों की भागीदारी और ऐसे ही अन्य अनेक कारण रहे होंगे – छायावादी कवियों के आधुनिकताबोध के पीछे। उन्हीं की प्रेरणा से छायावादी कवि दृष्टि में भी बदलाव आया। आप यहाँ बदलाव के

कारणों को भी समझने की कोशिश करें और काव्यात्मक परिणाम को भी। अर्थात यह देखें कि कविता कैसे अपनी बनावट अपनी भंगिमा बदल लेती है।

अब हम सीधे अपने मुख्य विषय पर आ सकते हैं और आधुनिक कविता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के महत्व पर विचार कर सकते हैं।

आधुनिक हिंदी कविता के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में प्रसाद के महत्व को समझने के लिए आरंभिक दो . काव्ययुगों की सीमाएँ विचारणीय हैं। भारतेन्दु युग में प्रायः ब्रजभाषा ही काव्य-भाषा रही है। खड़ी बोली। काव्यभाषा रहा हा खड़ा बाला में कुछ प्रयत्न हुए भी तो उन्हें स्वीकृति नहीं मिली। वैष्णवभक्ति की अभिव्यक्ति का प्रायः एक रूढ़ मुहावरा बन गया था। राष्ट्रीय आदर्शवाद जिस रूप में भी था, वह था अस्पष्ट और अमूर्त। द्विवेदी युग के काव्य में इतिवृत्तात्मकता और विवरणात्मकता ही प्रमुख हो गयी। वहाँ खड़ी बोली काव्य-भाषा ज़रूर है, पर अटपटी, कई बार ठस और स्थूल कथन पर आश्रित। इसीलिए छायावाद आया तो उसे स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह तक कहा गया। द्विवेदी युग की कविता को स्थूल इतिवृत्तात्मक बताकर शुक्ल जी छायावाद की नयी कल्पना, लाक्षणिकता, चित्रमयता को अलग करते हैं। प्रसाद अपनी काव्य यात्रा के पहले चरण में 'प्रेम पथिक (1909/1910) ब्रज भाषा में लिखते हैं और फिर उसे प्रायः आठ वर्ष बाद खड़ी बोली हिंदी में रूपांतरित करते हैं। इस अवधि में प्रसाद के लिए प्रेम का अर्थ बदल गया है। 'प्रेम पथिक' रूपांतरित होकर इस नयी भाषा तक पहुँचता है :[15]

'इस पथ का उद्देश्य नही है श्रांत भवन में टिक रहना
किंतु पहुँचना उस सीमा पर जिसके आगे राह नहीं।'

'आँसू', 'लहर', 'कामायनी' तक यह भाषा कितनी नयी हो उठी है, देखने की चीज़ है। यहाँ प्रसाद के महत्व को समझने के लिए उनके कवि व्यक्तित्व और उनकी काव्यात्मक संवेदना के कुछ और पहलुओं पर विचार करना अपेक्षित है।

प्रसाद का मूल्यांकन करते हुए आलोचक राम स्वरूप चतुर्वेदी दो संदर्भो को महत्व देते हैं – समरसता और संगीत। (प्रसाद-निराला-अज्ञेय : राम स्वरूप चतुर्वेदी, पृ0 34)। समरसता प्रसाद का जीवन-दर्शन है। क्या समरसता और संगीत पर एक साथ विचार करने का कोई अर्थ है? क्या कारण है कि प्रसाद बहुत से अनुभव संगीत की शब्दावली में व्यक्त करते हैं। प्रसाद के नाटक 'स्कंदगुप्त' की देवसेना समूची सृष्टि की व्याख्या विराट संगीत के रूप में करती है। उसका कहना है – 'प्रत्येक परमाणु के मिलने के इस जागरण गीत में 'विहाग' शब्द पर ध्यान दें :[13]

तु अब तक सोई है आली
आँखों में भरे विहाग-री

प्रसाद को रहस्यवादी कवि न कहकर आलोचक रमेशचंद्र शाह ने बौद्धिक कवि कहा है, लेकिन हम जानते हैं कि प्रसाद की बौद्धिकता अनुभूति और संवेदना से सम्पृक्त है और एक खास तरह की प्रतीक-व्यवस्था में अभिव्यक्ति पाती है। 'कामायनी' इसका प्रमाण है। प्रसाद गहरे अर्थ में सांस्कृतिक चेतना के कवि हैं — जातीय सांस्कृतिक इतिहास की सबसे प्रखर चेतना अपने काव्यबोध में लिए हुए। यह उनके महत्व का एक ज़रूरी संदर्भ है। प्रसाद के बाद निराला में ही यह सांस्कृतिक चेतना आपको मिलेगी – वह भी 'तुलसीदास' को छोड़कर खंड-खंड रूप में ही। प्रसाद के यहाँ यह चेतना अधिक गहरी है और उसकी प्रौढ़ परिपक्व अनुभूति उनकी कविता में ही संभव हुई है।

'कामायनी' एक क्लासिक कालजयी कृति है, जिसकी समकालीन अर्थवत्ता पर आपका ध्यान जाना ही चाहिए। 'कामायनी' छायावाद की अकेली महाकाव्यात्मक सृष्टि है। समरसता के दर्शन के सहारे प्रसाद की जिस ऐतिहासिक चेतना का आभास मिलता है, उससे 'कामायनी' की विचारधारा और प्रसाद की मनोभूमि को ठीक-ठीक समझा जा सकता है। 'कामायनी' के आमुख में प्रसाद के शब्द हैं'यदि श्रद्धा और मनु अर्थात मनन के सहयोग से मानवता का विकास एक रूपक है, तो भी बड़ा ही भावमय और श्लाध्य है। यह मनुष्यता का मनोवैज्ञानिक इतिहास बनने में समर्थ हो सकता है।' इसे आधार मानकर प्रायः 'कामायनी' के आलोचक मनोवैज्ञानिक रूपक के रूप में उसकी व्याख्या करते रहे हैं। अतः अंतर्वस्तु और संगठन दोनों दृष्टियों से 'कामायनी' का पुनर्मूल्यांकन ज़रूरी है, जो 'कामायनी 'के भावपक्ष, प्रसाद के जीवन दर्शन और 'कामायनी' के निष्कर्षों के आगे प्रश्न चिहन लगाता हो। मुक्तिबोध की दृष्टि में 'कामायनी' फैंटेसी है। वैदिक कथानक का यहाँ उपयोग एक फैंटेसी की तरह ही किया गया है जिसमें प्रसाद का अपना निजी भावबोध और सामाजिक बोध भी उजागर हुआ है।[11]

इस लिए 'कामायनी' आधुनिक जीवन-बोध का महाकाव्य बना है। विचारणीय है कि प्रसाद इस महत्वपूर्ण कृति में फैंटेसी के माध्यम से अपने इच्छित अभिप्रायों को किस प्रकार एकमेक करना चाहते हैं। यह तो स्पष्ट है कि प्रसाद वृत्तियों को मानव-चरित्र के रूप में देखते हैं। इस प्रक्रिया में भी कुछ समस्याएँ पैदा होती हैं जिनकी चर्चा हम आगे करेंगे।

हम यह मानकर चल रहे हैं कि 'कामायनी' की कथावस्तु आपके ध्यान में है। फिर भी उसकी एक संक्षिप्त रूपरेखा विचारार्थ सामने रख सकते हैं। जलप्रलय की घटना देवसृष्टि के ध्वंस का संकेत है जिसका कारण बना – देवताओं का निर्बाध विलास। अकेले बचते हैं मनु – जिन्हें बस शून्य दिखाई देता है, मृत्यु दिखाई देती है। सब कहीं जल ही जल है। फिर धीरे-धीरे पृथ्वी का आभास मिलने लगता है। लताएँ,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

वनस्पतियाँ दिखाई देती हैं, जो जीवन की उपस्थिति का संकेत हैं। अतः चिन्ता के बाद मन में आशा जगती है, किसी बचे हुए 'दूसरे व्यक्ति के लिए — जो उन्हें अकेलेपन से मुक्त करे| आशा निराशा के इसी द्वंद्व में श्रद्धा प्रकट होती है – रति-काम की पुत्री। विलक्षण नए सौंदर्य के साथ। एक भाववृत्ति का, रागात्मिका वृत्ति का स्त्री-रूप में सजीव प्रतिनिधि बन कर उपस्थित होना।

यह श्रद्धा मनु को जीवन में वापस लाती है। इस साहचर्य में श्रद्धा जब मानवकुमार को जन्म देने वाली है, ठीक उसी समय मनु चले जाते हैं। प्रसाद दिखा चुके हैं कि जब श्रद्धा इस स्थिति में आ रही थी, मनु के पूर्व संस्कार उन्हें पशु हिंसापूर्ण यज्ञ की ओर उन्मुख कर रहे थे जो उनकी ईर्ष्या का सूचक है। मनु अपनी भावी संतान के प्रति ईर्ष्या भाव को लेकर सारस्वत प्रदेश पहँचते हैं। वहाँ बुद्धि का प्रतीक इड़ा इनके . सामने हैं, 'बिखरी अलकें ज्यों तर्क जाल।' मनु उसे साथ लेकर प्रशासन तंत्र संभाल लेते हैं। नगर विकासमान है। कृषि, उद्योग, धातुओं के नए-नए हथियार, यंत्र, अहं के वर्चस्व के साथ ही नियमों का : अतिक्रमण इस प्रदेश की विशेषता बन गया है। । इड़ा उन्हें मर्यादा में देखना चाहती है। लेकिन मनु . इड़ा को भी अपनी अधीनता में रखना चाहते हैं। इससे कुपित होकर प्रजा विद्रोह कर देती है।[9]
प्रजा से युद्ध में मनु घायल हैं। श्रद्धा दुःस्वप्न के रूप में इस घटना को पहले ही कल्पित कर लेती है। वह शिशुकुमार के साथ आती है। मनु पछतावे की आग में झुलस रहे हैं। उन्हें श्रद्धा का कोमल स्पर्श मिलता है। साथ निकलते हैं। फिर एक रात अचानक मनु गायब हो जाते हैं।। इस बीच श्रद्धा-इड़ा संवाद की अत्यंत सार्थक योजना प्रसाद ने की है। श्रद्धा इड़ा की सीमा बताती है सिर चढ़ी रही, पाया न हृदय।' पर मानव कुमार को सौंपती है उसे ही। प्रसाद के मन में कहीं है कि भविष्य का मनुष्य एकांगी न हो। और यह भी, कि बुद्धि के बगैर कोई नया मनुष्य अकल्पनीय ही होगा। मनु कहीं गुफा में जा छिपे हैं। देख रहे हैं अखिल विश्व के बीच नटराज का नृत्य, कल्पना में अंतर्लीन होकर। श्रद्धा ही उन्हें इस आध्यात्मिक लक्ष्य तक ले जा सकती है। सुदूर ऊँचाई पर रहस्य ही रहस्य है। इच्छा ज्ञान-क्रिया अलगअलग ठहरे आलोक बिंदु हैं, जिन्हें श्रद्धा के अनुसार समन्वित करके ही मनुष्यता विजयी हो सकती है। ज्ञान और कर्म की एकता का मर्म भी वही समझाती है। रहस्य से परे एक आनंदभूमि है — जहाँ इड़ा भी मानव कुमार के साथ पहुँचती है। प्रकृति में सब कुछ समरस है। यही है प्रसाद का आनंदवाद, जो कामायनी का वास्तविक कथा संदर्भ है। पर कवि के मन में कोई विराट कल्पना है, जिससे यह महाकाव्यात्मक विजन संभव हुआ।

मुक्तिबोध कहते हैं कि प्रसाद मनु इड़ा श्रद्धा को अपनी दार्शनिक मनोवृत्तियों के अनुकूल चाहे जैसा प्रतीकत्व प्रदान करें, कामायनी की व्याख्या वर्णित मानव चरित्रों के आधार पर ही की जा सकती है। मुक्तिबोध का यह कहना ठीक है कि वेदकालीन मनु कामायनी का मनु नहीं है। प्रसाद का मनु उसी वर्ग का मनु है, जिसके स्वयं प्रसाद जी हैं। (कामायनी एक पुनर्विचार, मुक्तिबोध, पृ० 197) मुक्तिबोध अगर उसमें पूँजीवादी व्यक्तिवाद की प्रकृति देख रहे हैं, जिसने कभी जनतंत्रीकरण का या और किसी तरह के आदर्श का बहाना भी नहीं किया – श्रद्धा और इड़ा को जब चाहा साथ ले लिया तो ठीक ही है। इसमें संदेह नहीं कि श्रद्धा का आदर्शीकरण प्रसाद अंत तक करते हैं – इस हद तक, कि वह काल्पनिक सृष्टि ही लग सकती है। दूसरी ओर वे इड़ा को. संपूर्ण स्वतंत्र व्यक्तित्व अर्जित करने से रोकते हैं।[7]
अब जहाँ तक 'कामायनी' में राष्ट्रीय चेतना देखने का सवाल है, उसकी मूल संकल्पना किसी भी संकुचित राष्ट्रवाद के विरूद्ध है। विश्वमंगल ही इसका मूल प्रयोजन है। प्रसाद की स्वाधीन चेतना और विश्वदृष्टि का ही परिणाम है – कामायनी। बीसवीं शताब्दी के दूसरे-तीसरे दशक का राजनीतिक सांस्कृतिक समय 'कामायनी' में कहाँ किस रूप में है, विचारणीय संदर्भ यह है। मुक्तिबोध इसी प्रेरणा से कहते हैं कि प्रसाद का दर्शन एक उदार पूँजीवादी – व्यक्तिवादी दर्शन है जो वर्ग विषमता की निंदा भी करता है और वर्गातीत चेतना के आधार पर समाज के वास्तविक द्वंद्वों पर पर्दा डालना चाहता है या उनका काल्पनिक समाधान सुझाना चाहता है। 'कामायनी' की प्रतीकात्मकता को ध्यान में रखें तो देवसृष्टि विषयक विलास स्मृतियाँ सामंती सभ्यता की समाप्ति की सूचना देने के साथ ही पूँजीवादी युग के आरंभ की भी सूचक है।

यहाँ हम आपका ध्यान मुक्तिबोध की इस विस्तृत व्याख्या की ओर आकृष्ट करेंगे – यह बताने के लिए कि देश काल की समस्याएँ भावात्मक प्रतीकीकरण के आवरण के बावजूद ऐसी तीखी आलोचनात्मक जिज्ञासा के बीच प्रकट हो जाती हैं। इससे यह भी समझना चाहिए कि एक ही महत्वपूर्ण कृति अपने भीतर इतने आयाम छिपाए रहती है कि आलोचक उसे अलग-अलग पढ़ने में, उसकी अलग-अलग व्याख्या करने में समर्थ होते हैं। मुक्तिबोध का कामायनी संबंधी पाठ (रीडिंग) उनका अपना पाठ है और आज के पाठकों के लिए कहीं ज्यादा विश्वसनीय है। मुक्तिबोध की व्याख्या इस प्रकार है – 'यद्यपि अखिल भारतीय पैमाने पर पूँजीवाद का ही विस्तार हो रहा था, राजनीति, समाजनीति के क्षेत्र में इस प्रक्रिया ने गांधीवादी अर्थतंत्र की प्रवृत्ति को जन्म दिया।
मशीनों के विरूद्ध, व्यापक औद्योगीकरण के विरूद्ध, राष्ट्र के केंद्रस्थ शासन तंत्र के विपरीत ग्राम प्रजातंत्र की स्थापना के पक्ष का समर्थन करने वाली विचारधारा एक ऐसी विचारधारा थी, जो भारत की अविकसित आर्थिक अवस्था को कायम रखना चाहती थी, बढ़ते हुए पूंजीवाद के प्रति शंकालु थी, वैचारिक क्षेत्र में उसका विरोध करती थी तथा भारत के पिछड़े हुए स्वरूप को समाप्त करने के बजाए उस स्वरूप में आदर्शवादी रंग मिलाना चाहती थी।' [6]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

मुक्तिबोध इड़ा को पूँजीवादी सभ्यता की उन्नायिका कहते हैं जिसकी प्रसाद के भाववाद ने उपेक्षा की। फिर भी प्रसाद ने इड़ा का जो व्यक्तित्वविधान किया उसमें नई युगचेतना के सभी सकारात्मक तत्व वर्तमान है :

बिखरी अलकें ज्यों तर्क – जाल।
गुंजरित मधुप – सा मुकुल सदृश
वह आनन जिसमें भरा गान
वक्षस्थल पर एकत्र धरे
संसृति के सब विज्ञान – ज्ञान
था एक हाथ में कर्म – कलश
वसुधा – जीवन रस सार लिए
दूसरा विचारों के नभ को
था मधुर अभय अवलंब दिए

(इड़ा सर्ग)

कहने की आवश्यकता नहीं, कि प्रसाद की व्यापक राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का विश्वमंगल से विरोध न था। श्रद्धा कहती ही है :

विश्व भर सौरभ से भर जाय
सुमन से खेलो सुंदर खेल
(श्रद्धा सर्ग)

यह भी सही है कि प्रसाद शोषण उत्पीड़न के विरोध में थे – द्वंद्वों से क्षुब्ध थे – विषमतारहित समाज की स्थापना चाहते थे, भले ही समाधान उनका काल्पनिक हो, आदर्शवादी हो। कहा जा सकता है कि कामायनी की मिथकीय सीमाओं में भी कर्मचेतना, संघर्ष चेतना, एकता जैसे तत्व थे, जिनका महत्व राष्ट्रीय-आंदोलन के लिए था।

प्रसाद अपनी आरंभिक कृति 'चित्राधार' में यह कहने का साहस कर सके, कि उस ब्रह्म को लेकर मैं क्या करूँगा जो साधारण जन की पीड़ा नहीं हरता। 'ऐसो ब्रह्म लेइ का करिहैं जो नहिं करत, सुनत नहिं जो कछु, जो जन पीर न हरिहैं। 'झरना' में प्रसाद प्रेम की यह स्वच्छन्द अभिव्यक्ति दे सकते थे :

कर गई प्लावित तन मन सारा
एक दिन तव अपाड.ग की धारा[4]
हृदय से झरना बह चला,
जैसे छा जल ढरना
प्रणय वन्या ने किया पसारा

'आँसू' प्रसाद की महत्वपूर्ण कृति है। पहले संस्करण में 'मुक्तकों' के संकलन-जैसी कृति। आठ वर्ष बाद प्रकाशित दूसरे संस्करण में कथा के अस्पष्ट विधान के रूप में 'प्रबंध गीति'। 'आँसू' में विगत विलास स्मृतियाँ जिस तरह व्यक्त हैं उसी तरह 'कामायनी' के 'चिंता सर्ग' में विगत विलास सुख की स्मृतियाँ हैं। 'आँसू' की अंतिम पंक्तियाँ उसी विश्वमंगल की भावना की अभिव्यक्ति हैं जो 'कामायनी' की कल्पना के मूल में है :

सब निचोड़ लेकर तुम

सुख से सूखे जीवन में

बरसो प्रभात हिमकन – सा

आँसू इस विश्व-सदन में

वियोग की विकलता के साथ आँसू का आरंभ है। वेदना का हाहाकार है, स्मृतियाँ हैं, संयोग के सुख की, प्रिय के मिलन की स्मृतियाँ भी साथ हैं। फिर वही धनीभूत पीड़ा – आँसू में अभिव्यक्ति पाती है।। व्यक्तिगत वेदना कैसे व्यापक कल्याण भावना में बदलने लगती है, यह महत्वपूर्ण है। 'चिरदग्ध दुखी यह वसुधा/आलोक माँगती, तब भी'। यही अनुभव कवि को विश्व भावना तक ले जाता है।

'लहर' की पहली कविता 'लहर' भी प्रसाद के भावलोक का संकेत देती है, जिसमें प्रेम, करूणा, स्वच्छंद जीवन की आकांक्षा के लिए खास जगह है : [2]

उठ उठ री लघु लोल लहर
करूणा की नव अंगराई – सी

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

मलयानिल की परछाई – सी
इस सूखे तट पर छिटक छहर

'लहर' में भी 'कामायनी' के 'मेरे क्षितिज उदार बनो' जैसी अभिव्यक्ति है। नवजागरण का संकेत 'बीती विभावरी जाग री' जैसे गीत में भी है जिसे 'अब जागो जीवन के प्रभात' – जैसे गीतों में भी देखा जा सकता है। 'लहर' की लम्बी कविताओं में 'प्रलय की छाया' सबसे महत्वपूर्ण है जिसके राजनीतिक निहितार्थ भी हैं। 'शेर सिंह का शस्त्र समर्पण' तथा 'पेशोला की प्रतिध्वनि' अन्य ऐतिहासिक कविताएँ हैं, जो राष्ट्रीय-सांस्कृतिक जीवन की झलक देती हैं। विचारकों द्वारा कहा गया है कि शेर सिंह का पंचनद और पेशोला का मेवाड़ इतिहास नहीं, बल्कि प्रसाद का जीता जागता वर्तमान है। वर्तमान भी कैसा – पराजय की गहरी पीड़ा के साथ। उसे समझने के लिए 'जीत होती जिसकी, वही है आज हारा हुआ, ' तथा 'अरूण करूण बिंब/ वह निधूम भस्मरहित ज्वलन पिंड' जैसी पंक्तियों पर ध्यान जाना चाहिए।

हम पहले भी कह चुके हैं कि महत्वपूर्ण कृतियाँ आलोचकों द्वारा हमेशा नयी दृष्टि से पढ़ी जाती हैं, और नयी व्याख्या प्राप्त करती हैं। 'प्रलय की छाया' की राजनीतिक अर्थवत्ता खोजते हुए उसे नामवर सिंह अलग ढंग से पढ़ते हैं। नामवर सिंह के लिए कविता का राजनीतिक अर्थ स्वाधीनता संग्राम के एक विशेष दौर की मनोदशा से संबद्ध है। (नामवर सिंह वाद विवाद संवाद/20 69)। यह बात ध्यान में रखें कि यह कविता 'हंस' के जनवरी 1931 अंक में प्रकाशित हुई थी। 1930 के आसपास का राजनीतिक समय एक तरह की पराजय की मनोदशा को अभिव्यक्ति है। नामवर सिंह व्याख्या के क्रम में संकेत करते हैं कि कमलावती राजशक्ति को नष्ट करने की कोशिश में स्वयं नष्ट हुई। इससे उसकी आत्मप्रवंचना के राजनीतिक निहितार्थों का अनुमान किया जा सकता है।[1]

'लूटा था दृप्त अधिकार ने/ जितना विभव, रूप, शील और गौरव को/ आज वे स्वतंत्र हो बिखरते हैं। एक माया-स्तूप-सा/ हो रहा है लोप इन आँखों के सामने देख कमलावती। दुलक रही है हिम बिंदु-सी/ सत्ता सौंदर्य के चपल आवरण की।'

भारत के स्वाधीनता आंदोलन के असहयोग वाले दौर के परिप्रेक्ष्य में इस कविता का इतिहास-संदर्भ समकालीन और प्रासंगिक जान पड़ता है।

प्रसाद आधुनिक बोध और संवेदना के कवि हैं। छायावादी कवियों के आधुनिकता बोध में वैयक्तिक चेतना के साथ नयी सौदर्य चेतना, नयी प्रेम चेतना, नयी नैतिक चेतना का संश्लिष्ट रूप देखा जा सकता है। डॉ0 देवराज, जिन्होंने कभी 'छायावाद का पतन' नाम की विचारोत्तेजक पुस्तक लिखी थी, मानते हैं कि छायावाद अनाधुनिक पौराणिक-धार्मिक चेतना के विरूद्ध आधुनिक लौकिक चेतना का विद्रोह था। इस मत को आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी के इस कथन से संबद्ध करके देखें – 'नयी छायावादी काव्यधारा का भी एक आध्यात्मिक पक्ष है, परंतु उसकी मुख्य प्रेरणा धार्मिक न होकर मानवीय है।' (आधुनिक हिंदी समीक्षा/ निर्मला जैन : प्रेमशंकर, पृ0 82)। इस प्रकार छायावाद में लौकिक मानवीय संस्पर्श वाली कविता का अनादर नहीं है। यह ज़रूर है कि कई बार छायावादी कवियों के यहाँ लौकिक-मानवीय अनुभव पर अस्पष्टता का पर्दा पड़ा रहा है। जैसा प्रसाद की कृति 'आँसू' में देखा गया, या 'लहर' की कई कविताओं में।

इन कृतियों में भी प्रसाद संकेत से बहुत कुछ कह जाते हैं और ऐसी वेदना का चित्र भी उपस्थित कर जाते हैं जो लौकिक मानवीय है। कविता में 'आत्मकथा' लिखने का यह ढंग प्रसाद ने ही अपनाया है :

जिसके अरूण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में
अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में
उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की
सीवन को उधेड़ कर देखो क्यों मेरी कंथा की[2]

यह कविता 'हंस' के प्रसिद्ध आत्मकथा अंक में छपी भी थी। प्रसाद जैसे कवि के आधुनिकताबोध को नयी सौंदर्य चेतना के आधार पर पहचानना होगा। यह सौंदर्य दृष्टि प्रकृति और मनुष्य के बीच नए संबंधों की पहचान में भी प्रकट हुई है। इसी नयी सौंदर्य चेतना के कारण अनुभव के स्तर पर एक नए प्रकार के आंतरिक द्वंद्व का भी पता चलता है। यही दृष्टि वस्तु और कल्पना के नए संबंध की पहचान कराती है। कल्पना के महत्व को परम्परागत अलंकारप्रियता के विरुद्ध विद्रोह के रूप में भी देखा जा सकता है। अनुभव की प्रणाली और अभिव्यक्ति रूपों में जो नवीनता दिखाई देती है, उसे आधुनिक बोध से संबद्ध करके देखने की ज़रूरत है। 'कामायनी' के मनु के भीतर जो उद्विग्नता है वह एक आधुनिक मन की उद्विग्नता जान पड़ती है :

दुख का गहन पाठ पढ़कर अब

सहानुभूति समझते थे
नीरवता की गहराई में
मग्न अकेले रहते थे

आप देखें कि प्रसाद की भाषा में यहाँ एक विशेष प्रकार के नयेपन का आभास है। श्रद्धा मनु को नूतनता के आनंद का रहस्य बताती है। कहा जा सकता है कि दुखवाद और आनंदवाद के द्वंद्वपूर्ण साहचर्य में प्रसाद ने आधुनिक बोध या आधुनिक संवेदना प्राप्त की। प्रसाद ही की

पंक्ति ले चल वहाँ भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे-धीरे' के आधार पर छायावाद को कभी 'पलायनवाद' कहा जाता था। प्रसाद ही प्रमाण है कि छायावाद में जो आधुनिकबोध है उस पर समय का, ऐतिहासिक समय का दबाव भी है।

'कामायनी' के आधुनिक बोध को समझने के लिए ज़रूरी है कि हम विचार या विचारधारा के रूप में ही उमें न देखें – सीधे कविता में देखें। क्या कारण है कि आज के पाठक को 'चिंता' सर्ग महत्वपूर्ण लगता है जो मनु के अनुभई के रूप में असह्य अकेलेपन का आख्यान है। जलप्रलय की स्थिति में मनु का अकेलापन उन्हें जिन प्रश्नों से टकराने को बाध्य करता है, वे प्रश्न प्रायः आज के मनुष्य को बेचैन करते हैं :

ओ चिंता की पहली रेखा,
अरी विश्व – वन की व्याली
ज्वालामुखी स्फोट के भीषण,
प्रथम कंप – सी मतवाली
इस ग्रह कक्षा की हलचल री
तरल गरल की लघु लहरी
जरा अमर जीवन की, और न
कुछ सुनने वाली बहरी[3]

'श्रद्धा' सर्ग में श्रद्धा का सौंदर्य चित्रण नई सौंदर्य-दृष्टि का संकेत है। रीतिकालीन कवियों के नख-शिख वर्णन से भिन्न इस चित्रण में सौंदर्य का जादू ही आकृष्ट नहीं करता, विश्व मंगल की भावना और उदारता भी आकृष्ट करती है। प्रसाद ने अपने भाववादी समाधान के लिए श्रद्धा का जैसा भी उपयोग किया हो, उसका व्यक्तित्व विधान आधुनिक संवेदना का ही परिणाम है। यहाँ शब्द चयन पर ध्यान दें :

हृदय की अनुकृति बाह्य उदार
एक लंबी काया उन्मुक्त,
मधु पवन क्रीड़ित ज्यों शिशुसाल
सुशोभित हो सौरभ संयुक्त
नित्य यौवन छवि से ही दीप्त
विश्व की करूण कामना मूर्ति,
स्पर्श के आकर्षण से पूर्ण
प्रकट करती ज्यों जड़ में स्फूर्ति

वह हृदय की अधीर लालसाओं को जगाने वाली है। कर्म में, कर्म के भोग में प्रवृत्त करने वाली है। वह जटिलताओं का सामना करने का साहस दे रही है। दुनिया को सुंदर बनाने की उसकी कल्पना है – उसकी अपनी मूल्य-चिंता। वह विषमता के विरूद्ध है। पुरातनता के विरूद्ध परिवर्तन के पक्ष में है। स्त्री पुरूष साहचर्य-समानता के बारे में सचेत है। स्त्री मुक्ति का यह भावात्मक आदर्श उसकी जीवन शैली है। ललित कलाओं को सीखती-जानती हुई वह मनु तक पहुँची है। संसार की पीड़ा जैसे उसने प्रकृति में ही देख या जान ली है – 'धरा की यह सिकुड़न भयभीत/ आह कैसे है क्या है पीर।[4]

मनु से घनिष्ठ संपर्क के अनुभव ने उसे स्नेह के अंतर्दाह से परिचित कराया है। इड़ा तो आधुनिक युग की बुद्धिचेतना ही है। संकीर्णताएँ आधुनिक समाज में जो समस्याएँ उत्पन्न करती हैं, उनकी ओर स्पष्ट संकेत है। यह है मनु के सामने उपस्थित समाज, जिसके द्वंद्व आज तक सुलझाए नहीं जा सके हैं। क्या विडम्बना है कि बीसवीं शताब्दी के अवसान के समय यह चित्र अत्यधिक प्रश्नाकुलता से भरा जान पड़ता है :

यह अभिनव मानव प्रजा-सृष्टि
द्वयता में लगी निरंतर ही वर्णों की करती रहे वृष्टि
अनजान समस्याएँ गढ़ती रचती हो अपनी ही विनष्टि
कोलाहल-कलह अनंत चले, एकता नष्ट हो, बढ़े भेद

फिर भी आप अनुभव करेंगे कि प्रसाद के आधुनिक बोध की अपनी सीमाएँ हैं। वे मनु की प्रश्नशीलता को कर्मजीवन में चरितार्थ होते हुए नहीं दिखाते हैं बल्कि उसे वायवीय दार्शनिक समाधान देकर काल्पनिक आनंदवाद की भूमिका में ले जाते हैं। क्या 'कामायनी' में कही जाने वाली मानव-विकासयात्रा की विसंगति पर उस समय के राजनीतिक यथार्थ की छाया है? मुक्तिबोध याद दिलाते हैं कि सामंती तत्वों ने सामाजिक-राजनीतिक धरातल पर साम्राज्यवाद से अटूट समझौता कर रखा था, फिर भी उच्च कुलोद्भव कुछ सामंती तत्व राष्ट्रवादी आंदोलन में भी आए और कांग्रेस के भीतर उन्होंने नवीन राष्ट्रीय पूँजीवाद से समझौता किया।

फिर भी, 'कामायनी' की आधुनिकता इसी से प्रकट है कि वह 'बड़े जीवन चक्रों' की, जटिल राष्ट्रीय सामाजिक समस्याओं के बीच अभिव्यक्ति का प्रयास है। 'कामायनी' एक अर्थ में सभ्यता-समीक्षा का ही काव्यात्मक प्रयास है। मनु के अंतर्द्वंद्वों को लिए हुए, आंतरिक द्वंद्वों के भावचित्रों को संयोजित करते हुए प्रसाद ने इस कृति को आत्मपरक फैंटेसी की तरह लिखा है। 'कामायनी' जिस अर्थ में सकर्मक

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

जीवन अनुभव और अकर्मक जीवन अनुभव के बीच के तनाव को कलात्मक अभिव्यक्ति देती है, उसके पीछे आधुनिक बोध और संवेदन की स्पष्ट भूमिका है। आप देखें कि आधुनिक जीवन-दृष्टि के रूप में 'कामायनी' के दर्शन की कितनी भी सीमाएँ हों, कवि ने अनुभूतियों के चित्रण की एक नयी कला अर्जित कर ली है। इस विशिष्टता को आप 'श्रद्धा' सर्ग पढ़ते हुए बार-बार देखेंगे, अनुभव करेंगे।
आप देखेंगे कि 'आँसू' में प्रसाद निजी वेदना को व्यापक रूप देते हुए आंतरिक तनाव को छिपाते नहीं हैं, फिर भी प्रेम के उदात्तीकरण का आदर्श उपस्थित करते हैं – प्रसाद की आधुनिकता इसी तनाव में है। वेदना की आह ही 'आँसू' में सब कुछ होती तो हमें यह रोमांटिक भावना की ही कृति जान पड़ती। यहाँ रोमांटिक भावना है पर उसके साथ लगा लिपटा आधुनिक ढंग का तनाव भी है। प्रसाद के द्वंद्व स्पष्ट हैं, जहाँ व्यक्तिगत वेदना की तीव्रता भी दिखाई देती है और एक तरह की तटस्थता भी दिखाई देती है :[5]

छलना थी तब भी मेरी

उसमें विश्वास घना था
उस माया की छाया में
कुछ सच्चा स्वयं बना था।

'आँसू' के बोध और अभिव्यक्ति में आधुनिकता की पहचान करते हुए एक आलोचक डॉ0 रमेशचंद्र शाह ने उसे 'प्रयोगशीलता' का काव्य कहा है। उनका आशय यह है कि प्रसाद एक तरह की प्रगीतात्मकता और प्रबंधात्मकता में जो नया संबंध बनाते हैं वह एक तरह की प्रयोगशीलता है। पर हमें ऐसे शब्दों के प्रयोग से बचना चाहिए जो विशिष्ट अर्थ में रूढ़ हो चुके हों। हाँ 'आँसू' का आधुनिक बोध या नयापन उसके रूप (या फार्म) में भी है। पर क्योंकि 'प्रयोगशील' तथा 'प्रयोगवाद' उत्तर-छायावाद युग की प्रवृत्ति के साथ जुड़ा है अतः भ्रम पैदा कर सकता है।

'लहर' के प्रगीतों में प्रसाद अधिक स्वच्छन्द दिखाई देते हैं। पर उनका आधुनिक बोध और संवेदन प्रकट होता है 'प्रलय की छाया' जैसी लम्बी कविता में — जिसमें कमला के माध्यम से एक विलक्षण रूपगर्विता का चित्र हमारे सामने आता है। हम पहले भी इस कविता के राजनीतिक अर्थ का उल्लेख कर चुके हैं। पर मूल द्वंद्व तो कविता का यही है – सत्ता से टकराने की कोशिश में स्वयं ही टूट जाना। द्वंद्व के इस अनुभव में आधुनिक ढंग का तनाव है :[6]
शक्तिशाली होना अहोभाग्य है और फिर
बाधी-विघ्न आपदा के तीव्र प्रतिघात, का
सबल विरोध करने में कैसा सुख है?
इसका भी अनुभव हुआ था भलीभांति मुझे
किंतु वह छलना थी मिथ्या अधिकार की
हम यहाँ केवल संकेत दे रहे हैं कि सरल इकहरे समाधान में आधुनिकता नहीं है। आधुनिकता है द्वंद्व या तनाव में जिसे हम कविता में कई स्तरों पर देख सकते हैं। आपसे अपेक्षा की जाएगी कि आप कविता में आधुनिक ढंग के अनुभवों को देख सकें 1 प्रसाद में भी और प्रसाद साहित्य से अलग भी।
यहाँ विशिष्ट पाठ के लिए हमने निम्नलिखित कविताओं का चयन किया है :

- कामायनी : श्रद्धा सर्ग
- आँसू
- प्रलय की छाया

अब हम इन कविताओं पर पाठ-विश्लेषण की दृष्टि से विचार करेंगे। महत्वपूर्ण कविता अपने संगठन या स्थापत्य में भी महत्वपूर्ण होती है और उसके बाहर के संदर्भ से जुड़कर भी। जिस समय लिखी गयी, उस समय की संवेदना के अनुरूप कविता की व्याख्या की जाती है। जिस समय कविता पढ़ी जा रही है, उसे बदले हुए समय की संवेदना के आधार पर भी पढ़ा जा सकता है। यहाँ कविता पाठक के लिए अपना नया अर्थ खोलती है। पाठ-प्रक्रिया में हम प्रसाद जैसे कवि को जब पढ़ते हैं तब युग तथा कविव्यक्तित्व की सामान्य विशेषताओं से भी परिचित होते हैं। फिर कविता में कवि की उन विशेषताओं की ओर ध्यान जाता है जो उसकी संरचना या संगठन में प्रमुख रूप से सहायक हुई हैं। इस प्रकार महत्वपूर्ण है कविता का सीधा, सघन, निजी पाठ। हम चाहेंगे कि चयन की कविताओं को आप अपनी व्यक्तिगत आस्वाद-क्षमता के अनुसार सराहते हुए पढ़ें।[7]
जब हम कविता के सीधे पाठ पर बल देते हैं तो किन्हीं दो-एक संदर्भो को संवाद के लिए निर्धारित कर देना शायद बहुत उपयोगी न हो, पर कविता के 'पाठ' की अपनी सीमाएँ भी होती हैं। हम 'श्रद्धा' सर्ग, को समझने के लिए एक वृहत्तर सौंदर्य की ओर संकेत करना चाहते हैं। श्रद्धा सर्ग को पढ़ते हुए सबसे पहले हमारा ध्यान ही जाता है – सौंदर्य चेतना पर जब श्रद्धा अचानक मनु के जीवन में आ उपस्थित होती है

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

और पूछती है कि 'संसार सागर की लहरों द्वारा उछाल फेंकी गयी 'मणि' की तरह तुम कौन हो, जो इस सूने अंचल की शून्यता को एक नए आलोक से भर दे रहे हो।' तब मनु का ध्यान इस 'रूप' पर जाता है। यही श्रद्धा है – कामगोत्रजा श्रद्धा रति और काम की पुत्री श्रद्धा तथा हृदय की सात्विक वृत्ति का मानवीकृत रूप| भावमयता में वह मूर्त और सजीव है। दीप्ति और सुकुमारता का विलक्षण संयोग है :

और देखा वह सुंदर दृश्य
नयन का इंद्रजाल अभिराम
कुसुम वैभव में लता समान
चंद्रिका से लिपटा घनश्याम

कल्पना से ही यह रूप समझ में आता है। इसलिए सादृश्य विधान की लड़ी यहाँ दर्शनीय है :

या कि नव इंद्र नील लघु श्रृंग
फोड़ कर धधक रही हो कांत
एक लघु ज्वालामुखी अचेत
माधवी रजनी में अश्रांत

'लघु ', 'अचेत ' जैसे विशेषणों पर ध्यान दें जो व्यक्तित्व की दीप्ति और ऊष्मा के व्यंजक हैं, पर महत्वपूर्ण है वय के अनुरूप रूप की कोमलता सुकुमारता भी। कल्पना पर इतना बल है कि श्रद्धा 'भावमूर्ति' अधिक लगती है 'मांसल शरीर' कम :

'कुसुम कानन अंचल में मंद
पवन प्रेरित सौरभ साकार
रचित परमाणु पराग शरीर
खड़ा हो ले मधु का आधार।
'.' और उस पर पड़ती हो शुभ
नवल मधु राका मन की साध।'

एक तो पराग परमाणुओं से रचित व्यक्तित्व की कल्पना और दूसरे वसंत की कल्पना का आधार लेकर, यौवन की नवीनता से संयुक्त व्यक्तित्व यहाँ अत्यंत चित्रमय हो गया है। ऐसी हैं मनु की चिंताएँ और असहायता का अनुभव। अकर्मकता की ग्लानि, पीड़ा, कर्म या काम के प्रति उत्सुक बनाती श्रद्धा, विश्व भावना, विश्वदृष्टि आदि कविता की शब्दावली में यह सब देखने की चीज़ है :[8]

कर रही लीलामय आनंद
महाचिति सजग हुई-सी व्यक्त
विश्व का उन्मीलन अभिराम
इसी में सब होते अनुरक्त
काम मंगल से मंडित श्रेय
सर्ग इच्छा का है परिणाम
चेतना का सुंदर इतिहास
अखिल मानव भावों का सत्य
विश्व के हृदय पटल पर दिव्य
अक्षरों से अंकित हो नित्य

श्रद्धा का यह सौंदर्य केवल सम्मोहन जगाने वाला नहीं है, नयी संस्कृति नये विचार देने वाला भी है।

'आँसू की काव्यानुभूति के केंद्र में है प्रेम संवेदना जो अस्पष्ट दिखने वाली प्रगीत योजना या मुक्तकशृंखला में एक कथा-लय जो एक प्रेमकथा या विरह कथा का आभास देती है। मिलन की पूर्व-स्मृतियाँ हैं और दुख का नैरन्तर्य। पहली चार पंक्तियाँ ही वेदना के तीव्र विस्फोट की झलक देती हैं :

'इस करूणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती।

संयोग की सुखद स्मतियाँ हैं –

'परिरम्भ कुम्भ की मदिरा
निश्वास मलय के झोंके
मुख चंद्र चाँदनी जल से
मैं उठता था मुँह धो के।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

'प्रेम की मादकता का तीखा अनुभव
'विष प्याली जो पी ली थी
वह मदिरा बनी नयन में
सौंदर्य पलक-प्याले का
अब प्रेम बना जीवन में।'
फिर वही छले जाने की पीड़ा, विक्षुब्ध करने वाला अंतर्दाह, और कहने के ढंग में जो नयापन है, उसे लक्ष्य करें :
'मादकता – से आये तुम
संझा से चले गये थे,
धीरे-धीरे वेदना व्यापक रूप लेती है – तब दिखाई देता है :
नीचे विपुला धरणी है
दुख भार वहन-सी करती
अपने खारे आँसू से
करूणा-सागर को भरती
और अंततः हम देखते हैं – प्रेम का उदात्तीकरण :
सबका निचोड़ लेकर तुम
सुख से सूखे जीवन में
बरसो प्रभात हिमकन-सा
आँसू इस विश्व-सदन में
आप देखेंगे कि 'आँसू' में कोई स्पष्ट क्रम नहीं है, इसलिए उसका सतर्क पाठ ज़रूरी है। वर्णन की परम्परागत रूढ़ियाँ भी हैं और नयी कल्पनाओं का साहस भी दिखाई देता है। कवि द्वारा रूप वर्णन के लिए कुछ आरंभिक रूपरेखा अटपटेपन या अधूरेपन में दी गई है। जैसे :
'कुछ रेखाएँ हो ऐसी
जिनमें आकृति हो उलझी
तब तक झलक वह कितनी
मधुमय रचना हो सुलझी
आप अनुभव करेंगे कि 'रूप' जिस पर कवि का इतना बल है – अपने में 'निसर्ग सुंदरता' अथवा शिशु की उर्मिल निर्मलता लिए हुए है। करूणा में आनंद का अभिप्राय प्रसाद यहाँ देना चाहते हैं। प्रसाद के 'आँसू' का अपना यही पक्ष है। 'आँसू', 'लहर', 'कामायनी' एक ही रचना-समय की कृतियाँ हैं, यह भी ध्यान में रखें।
'प्रलय की छाया' 'लहर' की महत्वपूर्ण रचना है। हम पहले ही इस कविता पर बहुत कुछ कह चुके हैं। इस ऐतिहासिक अनुभव में वर्तमान की पीड़ा किस तरह पहचानी जाएगी, यह अपने ढंग से देखनेजाँचने की चीज़ है। कमला का दर्प इन शब्दों में व्यक्त है :[9]
'मैं भी थी कमला
रूप-रानी गुजरात की
सोचती थी पद्मिनी जली थी स्वयं किंतु मैं जलाऊंगी
वह दावानल ज्वाला
जिसमें सुलतान जले।'

फिर कुछ और हो जाता है। जलाने की कोशिश में खुद जलने लगती है कमला। यह पछतावे का दंश ही कविता को महत्वपूर्ण बनाता है। 'प्रलय की छाया' में मुक्त छंद का विन्यास, नाटकीयता, चित्रगत जटिलता ध्यान देने की चीजें हैं। इसका वाचन करते हुए अनुभव करें पाठ के रूप में इसका सौंदर्य क्या है। इसका अर्थ-मर्म और कवित । में त्रासद विडम्बना का क्षण कहाँ है। कविता के रंगमंच पर रूपगर्विता कमला की उपस्थिति इस प्रकार हुई है :
पागल हुई मैं अपनी ही मृद्गंध से – कस्तूरी मृग जैसी।
पश्चिम जलधि में मेरी लहरीली नीली अलकावली समान
लहरें उठती थीं मानों चूमने को मुझको
और साँस लेता था संसार मुझे छूकर।
आत्म गर्व और फिर गर्व की व्याप्ति। शब्दों की कोमलता। भाषा का संगीत। ध्यान देने की ज़रूरत है कि रंगमंच के शब्द बिंब कहाँ विशेष अर्थ देने में सक्षम हैं :
'और परिवर्तन वह।

क्षितिज वटी को आंदोलित करती हुई
नीले मेघमाला-सी
नियति-नटी थी आई सहसा गगन में
तड़ित विलास-सी नचाती भौहें अपनी।'

इस इकाई में आपको प्रसाद-काव्य के प्रति उत्सुक बनाते हुए हमने चाहा है कि आप अनुभव करें कि प्रसाद अपनी काव्य चेतना और इतिहास की सांस्कृतिक चेतना के बीच कैसा संबंध प्रमाणित करते हैं। प्रसाद स्वच्छन्द कल्पना का, गहरी स्वानुभूति का कैसा उपयोग करते हैं। सारांश के रूप में इन स्थापनाओं को अपने ध्यान में रखें :[10]

- प्रसाद छायावाद की विशेषताओं का निर्माण करने वाले कवि हैं। उनकी कविता अपना वैशिष्ट्य प्रकट करने के साथ युगीन विशेषताओं को भी उद्घाटित करती है या चरितार्थ करती है।
- प्रसाद की राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक-बोध को भाषा शिल्प की नवीनता के स्तर पर भी पहचानना चाहिए।
- प्रसाद का कल्पना पर बल देना स्वाधीन चेतना को ही प्रमाणित करना है। यह स्वाधीन चेतना नए सौंदर्य बोध, नयी चित्रमयता, लाक्षणिकता, नए सादृश्य विधान, प्रकृति मनुष्य के नए संबंध, वस्तु और कल्पना के नए संबंध में पहचानी जा सकती है।
- प्रसाद काव्य को राष्ट्रीय काव्य, सांस्कृतिक जागरण का काव्य न कहकर 'शक्ति काव्य' कहा जाता है तो इसकी प्रेरणा प्रसाद के अपने काव्य में ही है।
- प्रसाद की कविता स्वाधीन चेतना के बल पर नयी मानव परिकल्पना में सक्षम है। वह नई संबंध भावना का संकेत है। प्रसाद राष्ट्रीय भावना की प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति के कवि हैं।
- प्रसाद की कल्पना इसी दृष्टि से अनुभव भाषा के नए साहचर्य (Association) विकसित करती है।
- छायावाद के कवि (जिसमें प्रसाद अग्रणी है) कविता की नई ही परिकल्पना करते हैं। प्रसाद के लिए कविता आत्मा की संकल्पनात्मक अनुभूति है, पंत के लिए परिपूर्ण क्षणों की वाणी है।
- प्रसाद तथा उनके सहयोगी छायावादी कवियों का बल नई सौंदर्य चेतना पर ही अधिक है।
- प्रसाद गहरे अर्थों में सांस्कृतिक चेतना के कवि हैं।
- प्रसाद समरसता दर्शन को एक भावात्मक आधार देने वाले कवि हैं जिसके लिए उन्हें इतिहास और फैंटेसी में एक नया संबंध विकसित करना पड़ता है। विश्व मंगल भावना 'कामायनी' में ही नहीं, 'आँसू' में भी और 'लहर' के प्रगीतों में भी अभिव्यक्ति प्राप्त करती है। कामायनी की प्रतीकात्मकता महत्वपूर्ण है। 'कामायनी' की मिथकीयता में भी कर्म चेतना, संघर्ष चेतना के लिए जगह है और उस पर दृष्टि जानी चाहिए।
- प्रसाद प्रेम को उदात्त बनाते हैं। 'आँसू' में हम इसे विशेष रूप से देख सकते हैं।
- 'प्रलय की छाया' तथा 'लहर' की अन्य लंबी कविताएँ जहाँ इतिहास चेतना की झलक देती हैं, वहाँ 'प्रलय की छाया' का एक राजनीतिक अर्थ भी है।
- 'कामायनी' में प्रसाद दुखवाद और आनंदवाद के बीच आधुनिक बोध या संवेदना का प्रमाण देते हैं।
- प्रसाद सभ्यता समीक्षा को एक भावात्मक परिप्रेक्ष्य देते हैं। वे सकर्मक जीवन और अकर्मक जीवन के बीच तनाव को भी प्रत्यक्ष करते हैं।[11]
- 'कामायनी' की श्रद्धा भावमूर्ति अधिक है मांसल कम। यह और बात है कि वही मनु को कर्म जीवन में प्रवृत्त करती है।
- प्रसाद-काव्य में नाटकीयता, कथा लय, जटिल चरित्रविधान का अपना महत्व है। प्रसाद के यहाँ संगीत, चित्र, रंगमंच की शब्दावली विशेष अभिप्राय से प्रयुक्त है।

ये कुछ स्थापनाएँ हैं जिनके आलोक में प्रसाद के अपने पाठ का रास्ता आपको स्वयं खोजना है और अपनी आस्वाद-क्षमता का विकास करना है।

परिणाम

काव्य रूप की दृष्टि से कामायनी चिंतनप्रधान है, जिसमें कवि ने मानव को एक महान् संदेश दिया है। 'तप नहीं, केवल जीवनसत्य' के रूप में कवि ने मानव जीवन में प्रेम की महत्ता घोषित की है। यह जगत् कल्याणभूमि है, यही श्रद्धा की मूल स्थापना है। इस कल्याणभूमि में प्रेम ही एकमात्र श्रेय और प्रेय है। इसी प्रेम का संदेश देने के लिए कामायनी का अवतार हुआ है। प्रेम मानव और केवल मानव की विभूति है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

मानवेतर प्राणी, चाहे वे चिरविलासी देव हों, चाहे देव और प्राण की पूजा में निरत असुर, दैत्य और दानव हों, चाहे पशु हों, प्रेम की कला और महिमा वे नहीं जानते, प्रेम की प्रतिष्ठा केवल मानव ने की है। परंतु इस प्रेम में सामरस्य की आवश्यकता है। समरसता के अभाव में यह प्रेम उच्छृंखल प्रणयवासना का रूप ले लेता है। मनु के जीवन में इस सामरस्य के अभाव के कारण ही मानव प्रजा को काम का अभिशाप सहना पड़ रहा है। भेद-भाव, ऊँच-नीच की प्रवृत्ति, आडंबर और दंभ की दुर्भावना सब इसी सामरस्य के अभाव से उत्पन्न होती हैं जिससे जीवन दु:खमय और अभिशापग्रस्त हो जाता है। कामायनी में इसी कारण समरसता का आग्रह है। यह समरसता द्वंद्व भावना में सामंजस्य उपस्थित करती है। संसार में द्वंद्वों का उद्गम शाश्वत तत्व है। फूल के साथ काँटे, भाव के साथ अभाव, सुख के साथ दु:ख और रात्रि के साथ दिन नित्य लगा ही रहता है। मानव इनमें अपनी रुचि के अनुसार एक को चुन लेता है, दूसरे को छोड़ देता है और यही उसके विषाद का कारण है। मानव के लिए दोनों को स्वीकार करना आवश्यक है, किसी एक को छोड़ देने से काम नहीं चलता। यही द्वंद्वों की समन्वय स्थिति ही सामरस्य है। प्रसाद ने हृदय और मस्तिष्क, भक्ति और ज्ञान, तप, संयम और प्रणय, प्रेम, इच्छा, ज्ञान और क्रिया सबके समन्वय पर बल दिया है।[12]

'कामायनी' जयशंकर प्रसाद कृत ऐसा महाकाव्य है जो सदैव मानव जीवन के लिए एक प्रेरणा बन कर रहेगा। कामायनी सदा से मेरी प्रिय पुस्तकों में से एक रही है। इसे मैंने कई बार पढ़ा, मुझे हर बार इसमें नए अर्थ मिले हैं। जीवन के हर दशक में, हर पड़ाव में नए सिरे से पढ़ने पर जीवन के प्रति जीवन का नया दर्शन पता चला है। कामायनी से मेरा परिचय अपने अस्तित्व से परिचय के तुरंत बाद का है, मेरी मां ने मुझे बताया कि उन्होंने मेरा नाम कामायनी से चुना, जहां इड़ा यानि बुद्धि का पर्याय मनीषा आता है। मेरी मां का प्रिय ग्रंथ मुझमें तो उत्सुकता जगाता ही। मैंने इसे किशोरावस्था में पढ़ा। फिर हिंदी में एमए करते हुए तो सिलेबस का महत्वपूर्ण हिस्सा रही कामायनी। 'कामायनी' जयशंकर प्रसाद कृत ऐसा महाकाव्य है जो सदैव मानव जीवन के लिए एक प्रेरणा बन कर रहेगा। कामायनी की कथा मूलत: एक कल्पना, एक फैण्टसी है। जिसमें प्रसाद जी ने अपने समय के सामाजिक परिवेश, जीवन मूल्यों, सामयिकता का विश्लेषित सम्मिश्रण कर इसे एक अमर ग्रन्थ बना दिया। यही कारण है कि इसके पात्र - मनु, श्रद्धा और इड़ा - मानव, प्रेम व बुद्धि के प्रतीक हैं। इन प्रतीकों के माधयम से कामायनी अमर हो गई। क्योंकि इन प्रतीकों के माध्यम से जीवन का जो विश्लेषण कामायनी में प्रसाद जी ने प्रस्तुत किया, वह आज भी उतना ही सामयिक है, जितना कि प्रसाद जी के समय में रहा होगा। देवों का घमण्ड, स्वयं सृष्टिकर्ता के रूप में स्वयं सृष्टि ने ही उनके उच्छृंखल व्यवहार को लेकर तीनों लोकों में प्रलय कर कैसे तोड़ा यह जहां पौराणिक ऐतिहासिक बात है वहीं एक सबक है मनुष्यत्व के प्रति...धरती के प्रति उनके मनमाने व्यवहार के प्रति। कामायनी का प्रथम प्रकाशन लगभग 58 वर्ष पूर्व हुआ था तब से आज तक लेकर कामायनी हिन्दी साहित्य में सर्वाधिक लोकप्रिय तथा विवादित और चर्चित पुस्तक रही है। हर विश्वविद्यालय के हिन्दी के पाठ्यक्रम में शामिल रही है। स्कूलों की 10वीं, 11वीं तथा 12वीं कक्षाओं के हिन्दी के कोर्स में भी में भी कामायनी के अंश शामिल रहे हैं। अपनी लोकप्रियता, आलोचना तथा प्रशंसा को समभाव से स्वीकार कर 'कामायनी' आज भी अपने स्थान पर अटल है। इसकी प्रासंगिकता सुधि पाठकों तथा आलोचकों के लिए आज भी उतनी ही है जितनी हमेशा रही है। संक्षेप में, कामायनी एक ऐसा महाकाव्य है, जो आज के मानव जीवन को उसके समस्त परिवेश व परिस्थिति के साथ प्रस्तुत करता है। यह भी देखें: सबसे ज्यादा फिल्में बनाने वाले देश में गांव के बच्चों के लिए फिल्मों का अकाल क्यों है मुक्तिबोध जी के शब्दों में – " कामायनी में वर्णित सभ्यता – प्रयासों के पीछे प्रसाद जी का अपना जीवनानुभव, अपने युग की वास्तविक परिस्थिति, अपने समय की सामाजिक दशा बोल रही है।" कामायनी में चिन्ता, आशा, श्रद्धा, काम, वासना, लज्जा, कर्म, इर्ष्या, इड़ा, स्वप्न, संघर्ष, निर्वेद, दर्शन, रहस्य, आनन्द नामक पन्द्रह सर्ग हैं। हर सर्ग में मनु की यानि मानव की दशा का हृदयस्पर्शी वर्णन विश्लेषण है... जो जीवन के हर पड़ाव, हर पहलू पर प्रकाश डालता चलता है। कामायनी में से मेरे प्रिय पद्यांश प्रस्तुत करने से पूर्व में स्वयं प्रसाद जी की पुस्तक में लिखी भूमिका के कुछ अंशों से पाठकों का परिचय करवाना चाहूँगी, जो कामायनी की कथा के मूल में ले जाएगी - " जलप्लावन भारतीय इतिहास में एक ऐसी प्राचीन घटना है, जिसने मनु को देवों से विलक्षण, मानवों की एक भिन्न संस्कृति प्रतिष्ठित करने का अवसर दिया। वह इतिहास ही है। 'मनवे वै प्रात:' इत्यादि से इस घटना का उल्लेख 'शतपथ ब्राह्मण' के आठवें अध्याय में मिलता है। देवगणों के उच्छृंखल स्वभाव, निर्बाध आत्मतुष्टि में अंतिम अध्याय लगा और मानवीय भाव अर्थात श्रद्धा और मनन का समन्वय होकर प्राणी को एक नए युग की सूचना मिली। इस मन्वन्तर के प्रर्वतक मनु हुए। मनु भारतीय इतिहास के आदिपुरुष हैं। राम, कृष्ण और बुद्ध इन्हीं के वंशज हैं।" यह भी देखें: जैसलमेर का सोनार किला जैसे रेत में गिरा कोई स्वर्ण मुकुट " श्रद्धा के साथ मनु का मिलन होने के बाद उसी निर्जन प्रदेश में उजड़ी हुई सृष्टि को फिर से आरम्भ करने का प्रयत्न हुआ। किन्तु असुर पुरोहित के मिल जाने से इन्होंने पशुबलि दी। ...इस यज्ञ के बाद मनु में जो पूर्वपरिचित देव प्रवृत्ति जाग उठी, उसने इड़ा के सम्पर्क में आने पर उन्हें श्रद्धा के अतिरिक्त एक दूसरी ओर प्रेरित किया। ... इड़ा के प्रति मनु को अत्यधिक आकर्षण हुआ और श्रद्धा से वे कुछ खिंचे। ऋगवेद में इड़ा का कई जगह उल्लेख मिलता है यह पजापति मनु की पथप्रदर्शिका, मनुष्यों का शासन करने वाली कही गई है।" "यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्भुत मिश्रण हो गया है। इसीलिए मनु, श्रद्धा और इड़ा आदि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए सांकेतिक अर्थ की भी अभिव्यक्ति करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मनु अर्थात मन के दोनों पक्ष हृदय और मस्तिष्क का सम्बन्ध क्रमश: श्रद्धा और इड़ा से भी सरलता से लग जाता है। श्रद्धा हृदय्य याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु (ऋग्वेद 10 – 151 – 4) इन्हीं सबके आधार पर 'कामायनी' की कथासृष्टि हुई है। हां ' कामायनी' की कथा श्रृंखला मिलाने के लिये कहीं-कहीं थोड़ी बहुत कल्पना को भी काम में ले आने

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

का अधिकार मैं नहीं छोड़ सका हूं।" -जयशंकर प्रसाद यह भी देखें: वे पगडंडियां ही क्या, जहां से होकर कठपुतली वाला न गुजरा हो कामायनी का अंश (चिन्ता सर्ग से) हिमगिरी के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छांह एक पुरुष, भीगे नयनों से, देख रहा था प्रलय प्रवाह। नीचे जल था, ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन एक तत्व की ही प्रधानता कहो उसे जड़ या चेतन। दूर दूर तक विस्तृत था हिम स्तब्ध उसीके हृदय समान नीरवता – सी शिला, चरण से टकराता फिरता पवनमान। तरुण तपस्वी सा वह बैठा, साधन करता सुर-श्मशान नीचे प्रलय सिन्धु लहरों का, होता था सकरुण अवसान। बंधी महाबट से नौका थी सूखे में अब पड़ी रही उतर चला वह जलप्लावन और निकलने लगी मही। निकल रही मर्म वेदना, करुणा विकल कहानी सी वहाँ अकेली प्रकृति सुन रही, हंसती सी पहचानी सी। चिन्ता करता हूं मैं जितनी उस अतीत की, उस सुख की उतनी ही अनंत में बनती जातीं रेखाएं दु:ख की। स्वयं देव थे हम सब, तो फिर क्यों न विश्रृंखल होती सृष्टि अरे अचानक हुई इसी से कड़ी आपदाओं की वृष्टि। मौन! नाश! विध्वंस! अंधेरा!शून्य बना जो प्रगट अभाव, वही सत्य है, अरी अमरते! तुझको यहाँ कहाँ ठांव। मृत्यु, अरी चिरनिद्रे! तेरा अंक हिमानी सा शीतल, तू अनन्त में लहर बनाती काल – जलधि की – सी हलचल। वाष्प बन उजड़ा जाता था वह भीषण जल संघात, सौर चक्र में आवर्तन था प्रलय निशा का होता प्रात:। (मनीषा कुलश्रेष्ठ हिंदी की लोकप्रिय कथाकार हैं। गांव कनेक्शन में उनका यह कॉलम अपनी जड़ों से दोबारा जुड़ने की उनकी कोशिश है। अपने इस कॉलम में वह गांवों की बातें, उत्सवधर्मिता, पर्यावरण, महिलाओं के अधिकार और सुरक्षा जैसे मुद्दों पर चर्चा करेंगी।

निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद के 'झरना' नामक काव्य की पंक्तियाँ याद आयीं-[5]

उषा का प्राची में अभ्यास, सरोरुह का सर बीच विकास ।

कौन परिचय था ? क्या सम्बन्ध ? गगन मंडल में अरुण विलास ॥

रहे रजनी मे कहाँ मिलिन्द ? सरोवर बीच खिला अरविन्द ।

कौन परिचय ? था क्या सम्बन्ध ? मधुर मधुमय मोहन मकरन्द ॥

हिन्दी के अध्येताओ को यह जानना चाहिए कि सन 1918 में प्रकाशित जयशंकर प्रसाद के काव्य 'झरना से ' हिन्दी साहित्य में छायावाद का प्रादुर्भाव हुआ। यह प्रसाद के यौवन काल की रचना है और इसकी कविताएं 1914-17 ई० के बीच रची गयी हैं। कवि की प्रारंभिक रचना होने पर भी इसे छायावाद की प्रयोगशाला का प्रथम आविष्कार कहा जाता है । 'दृग जल सा ढला' प्रसाद का यह झरना अपने परिवेश में ऐसी उर्वर, प्रवाहमयी गहन अनुभूति और प्रतीकात्मक शिल्प को लेकर चला कि छायावाद के गहन सागर में 'लहर' सी आ गयी । ध्यातव्य है की 'लहर' ' जयशंकर प्रसाद का द्वतीय गीतिकाव्य है जिसमे छायावादी प्रवृत्तियों का भरपूर विकास 'ले चल मुझे भुलावा देकर मेरे नाविक धीरे- धीरे ' जैसे गीतों में हुआ है। प्रसाद ने अपने 'आंसू' और 'कामायनी' प्रभृति काव्यो में खड़ी बोली की जो कमनीय, मधुर रस-धारा प्रवाहित की वह काव्य की सिद्ध भाषा बन गई । परिणामस्वरुप वे छायावाद के प्रतिष्ठापक ही नहीं अपितु छायावादी पद्धति पर सरस संगीतमय गीतों के लिखने वाले श्रेष्ठ कवि भी बने।[7]

छायावाद कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसे एक परिभाषा मे बाँध दिया जाय . अंगरेजी साहित्य के romanticism का जो प्रभाव बंग साहित्य से होकर हिन्दी मे आया और उससे हिन्दी साहित्य में जो स्वछंददतावादी काव्यधारा में प्रवाहित हुई उसे मुकुटमणि पाण्डेय ने 'छायावाद' का अभिधान दिया। भावों के इस स्वछंद प्रभाव से हिन्दी काव्य में अनेक नवीन प्रवृत्तियां विकसित हुयी जिनका समग्र रूप छायावाद कहा जाता है। इन प्रवृत्तियों के आईने मे प्रसाद की रचनाओ को देखने से उनके छायावादी स्वरुप का पता चलता है। मसलन प्रसाद के काव्य में वैयक्तिक चिंतन का प्राधान्य है जो कवि को अंतर्मुखी भी बनाता है। प्रसाद का 'आंसू' काव्य इसका अन्यतम उदहारण है। वे स्वयं अपनी व्यक्तिगत पीड़ा का स्वीकार करते है –

जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति सी छाई

दुर्दिन में आंसू बनकर वह आज बरसने आयी

छायावाद की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति है प्रकृति सौन्दर्य और प्रेम की व्यंजना। जयशंकर प्रसाद ने अपने काव्यो में प्रकृति को आलम्बन और उद्दीपनके रूप में तो दिखाया ही उसका मानवीकरण भी किया और एक नारी के रूप में भी देखा। मानव के आंतरिक सौन्दर्य की परख भी प्रसाद ने प्रकृति के उपादानों में ही की। आंसू काव्य का एक उदाहरण प्रस्तुत है –[9]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

शशि मुख पर घूँघट डाले अंचल में दीप छिपाए

जीवन की गोधूली में कौतूहल से तुम आये

प्रसाद ने नारी के सौन्दर्य का बड़ा ही मर्यादित वर्णन किया है जो छायावाद की एक और विशेषता है। रीतिकाल में नारी सौन्दर्य का अत्युक्तिपूर्ण मांसल और भदेस वर्णन हुआ है पर छायावादी कवियों ने नारी को उचित सम्मान दिया। 'कामायनी' मे प्रसाद ने नायिका श्रृद्धा का जो सौन्दर्य वर्णन किया है उसका मार्दव देखते ही बनता है । यथा –

नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग

किला ही ज्यों बिजली का फूल मेघ वन बीच गुलाबी रंग

इसी प्रकार छायावाद की अन्य प्रवृत्तियाँ जैसे- रहस्यानुभूति, तत्व चिंतन , वेदना और करुणा की विवृति, मानवतावाद, नारी के प्रति नवीन दृष्टिकोण, आदर्शवाद, स्वच्छन्दतावाद, राष्ट्रीयता और देशप्रेम. प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता, बिम्ब विधान, विशेषण विपर्यय आदि भी प्रसाद के काव्य में मिलते है, जिनके कारण यह प्रांजल रूप से कहा जा सकता है कि प्रसाद न केवल छायावाद के प्रवर्त्तक कवि है अपितु वे इस विधा में अप्रतिम भी हैं। इन मान दण्डो पर प्रसाद के काव्य का अनुशीलन करे तो अकेले 'कामायनी' ही सभी लक्षणों पर भारी है। रहस्यवाद की जैसी निष्पत्ति इस काव्य में हुयी है वह पन्त के 'मौन निमंत्रण' से कही आगे है। सम्पूर्ण सृष्टि किसके संकेतों पर चल रही है। ग्रह और नक्षत्र किसका संधान कर रहे हैं । वह कौन है जिसकी सत्ता सबने स्वीकारी है। 'कामायनी' में कथा नायक मनु के समक्ष ऐसे अनेक प्रश्न है। यह रहस्यानुभूति उन्हें विचलित भी करती है । यथा [11]-

महानील इस परम व्योम में, अन्तरिक्ष में ज्योतिर्मान

गृह नक्षत्र और विद्युत्कण किसका करते थे संधान

छिप जाते है और निकलते आकर्षण में खींचे हुए

तृण वीरुध लहलहे हो रहे किसके रस से सिंचे हुए

सर नीचा कर किसकी सत्ता सब करते स्वीकार यहाँ

सदा मौन हो प्रवचन करते जिसका वह अस्तित्व कहाँ?

'कामायनी' के बारे में तो सभी जानते है के यह शैव संप्रदाय के प्रख्यात प्रत्यभिज्ञा दर्शन पर आधारित काव्य है। अतः तत्व चिंतन तो इसका मूल विषय ही है। आत्मा. माया, पुरुष, प्रकृति , जगत, नियति के साथ ही और अनेक दार्शनिक चिंतन इस काव्य में प्रचुरता से मिलते हैं। शिव-तत्व को प्रसाद ने 'चिति' अथवा 'महाचिति' के रूप में दर्शाया है। इस प्रकार त्तात्विक विवेचन जो छायावाद के एक अंग माना गया है, उसमे भी प्रसाद अग्रगण्य है , क्योंकि कामायनी जैसा दार्शनिक चिंतन पूरे हिन्दी साहित्य में दुर्लभ है। शिव-तत्व को कामायनी में इस प्रकार दर्शाया गया है-[13]

1- कर रही लीलामय आनंद महाचिति सजग हुई.सी व्यक्त ।

विश्व का उन्मीलन अभिराम इसी में सब होते अनुरक्त ।

2- अपने दुख सुख से पुलकित यह मूर्त-विश्व सचराचर

चिति का विराट-वपु मंगल यह सत्य सतत चित सुंदर।

छायावाद के अंतर्गत करुण और वेदना की विवृति पर विचार करे तो प्रसाद के प्रत्येक काव्य में पीड़ा का बड़ा ही मर्मान्तक समाहार हुआ है। 'आंसू' काव्य तो संभवतः इसका अन्यतम उदाहरण है ही जो हिन्दी साहित्य जगत में मानव के अंतर की घनीभूत पीड़ा का पर्याय माना जाता है। एक उदाहरण देखिये –

रो रोकर सिसक कर कहता मैं करुण कहानी

तुम सुमन नोचते सुनते करते जानी अनजानी

प्रसाद की 'कामायनी' आधुनिक लालसाओं और कामनाओं कसे उत्पन्न विकृति की सच्ची आलोचना है। भौतिक विकास संसार को समप्ति की और ले जा रहा है। यह समाप्ति किसी भी रूप में हो सकती है- जल-प्रलय के रूप में । कामायनी का तो प्रारम्भ ही भौतिकतावाद की परिणामी सृष्टि विनाश की परवर्ती स्थितियों से होता है। कामायनी में मनु से मानव की उत्पत्ति दिखाकर प्रकृति ने मानो मानवतावाद को ही जन्मदिया है जो मनुष्य और प्रकृति के रागात्मक सम्बन्धो एवं अनुभूतियों से अधिकाधिक पुष्ट हुआ है।[15]

मधुमय बसंत से जीवन के बह अंतरिक्ष की लहरों में

कब आये थे तुम चुपके से रजनी के पिछले पहरों में

क्या तुम्हें देखकर आते यों मतवाली कोयल बोली थी

उस नीरवता में अलसाई कलियों ने आँखे खोली थीं

जब लीला से तुम सीख रहे कोरक कोने में लुक करना।

तब शिथिल सुरभि से धरणी में बिछलन न हुई थी सच कहना

नारी के प्रति प्रसाद के हृदय में सदैव एक दैवीय सम्मान रहा । यद्यपि व्यक्तिगत जीवन में जैसा उनके बारे में कहा जाता है उन्हें प्रेम में पराजय ही मिली और 'आंसू' काव्य उसी पराजय की अभूतपूर्व दास्तान है, पर इससे नारी के प्रति उनकी सम्मानजनक भावनाओं में कोई कमी नहीं आयी। प्रसाद ने 'बीती विभावरी जाग री' में' प्रकृति को नारी रूप में देखा और 'कामायनी' में तो मानव प्रवृत्यों के रूप में उनके पास मानवीकरण के लिए चिंता, आशा, श्रृद्धा , वासना, लज्जा, ईर्ष्या, इड़ा जैसे अनेक पात्र थे। पर 'लज्जा' सर्ग में प्रसाद ने नारी को जो अभिदान दिया वह हिन्दी साहित्य में अन्यतम है। इसको कवि का आदर्शवाद भी कहा जा सकता है, जो छायावाद का एक अनिवार्य तत्व भी है। निदर्शन निम्न प्रकार है –

"क्या कहती हो ठहरो नारी! संकल्प-अश्रु जल से अपने

तुम दान कर चुकी पहले ही जीवन के सोने-से सपने।

नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास-रजत-नग पगतल में,

पीयूष-स्रोत सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।

साहित्येतिहास के आधार पर यह सर्वमान्य है कि अंगरेजी के स्वछन्दतावाद से छायावाद हिन्दी में आया। इसका यह अर्थ भी है की छायावाद स्वछंदतावाद से कही आगे है और छायावाद में स्वछंदतावाद कही घुल-मिल गया है। इसलिए छायावाद को समझने के लिए पहले स्वछंदतावाद को समझना आवश्यक है ।[17] दरअसल इंग्लॅण्ड में कविता के अंतर्गत रोमांटिक स्वछंदतावाद औद्योगिक क्रांति की प्रतिक्रिया के रूप में विकसित हुआ। इसके साथ ही यह सामाजिक और राजनैतिक अभिजातीयकरण के खिलाफ भी एक विद्रोह था। वैज्ञानिक उत्कर्षों की शुष्कता से लोग उकताए और घबराए थे। ऐसे समय में अंग्रेजों ने साहित्य, संगीत और कलाओं में सुकुमार रूमानी कल्पनाओं को स्थान दिया । यह स्वछन्दतावाद छायावाद का अनिवार्य अंग है । 'कामायनी' के बारे में में भी यही बात लागू होती है , क्योंकि इसका प्रारम्भ ही एक भौतिकतावादी सभ्यता के विनाश के अधिकरण पर टिका हुआ है। प्रसाद का रोमांटिक स्वच्छन्दतावाद उपमा, रूपक, प्रतीक और बिम्ब योजना से अलंकृत है । यथा-[10]

परिरम्भ कुम्भ की मदिरा निश्वास मलय के झोंके

मुख चन्द्र चाँदनी जल से मैं उठता था मुँह धोके।

थक जाती थी सुख रजनी मुख चन्द्र हृदय में होता

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

श्रम सीकर सदृश्य नखत से अम्बर पट भीगा होता ।

मादक थी मोहमयी थी मन बहलाने की क्रीड़ा

अब हृदय हिला देती है वह मधुर मिलन की पीड़ा ।

राष्ट्रीयता और देश-प्रेम तो प्रसाद के काव्य में ही नहीं उनके नाटकों में भी उभर कर सामने आया है । 'स्कंदगुप्त' नाटक का प्रसिद्ध गीत 'हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार' आत्म-गौरव का ओजस्वी उद्बोधन है । प्रसाद की दृष्टि में भारत की संस्कृति चाहे वह अशोक की करुणा से आप्यायित हो या बुद्ध की अहिंसा से उसने किसी न किसी रूप में पूरे विश्व को प्रभावित अवश्य किया है। जन-जागरण में भी प्रसाद कहीं पीछे नही हैं। आर्य-संतान होने का अभिमान उन्हें भी है । मातृगुप्त के शब्दों में उनका यह आत्म गौरव ही मुखर होता है -

वही है रक्त, वही है देह, वही साहस है, वैसा ज्ञान

वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य संतान ।

मैथिलीशरण गुप्त ने पराधीनता की विदाई और स्वराज्य के आने का संकेत 'साकेत' में दिया था – 'सूर्य का यद्यपि नहीं आना हुआ। किन्तु समझो रात का जाना हुआ ॥' ' इसी प्रकार का सांकेतिक उद्बोधन प्रसाद ने 'लहर' काव्य की कालजयी कविता 'बीती विभावरी जाग री' में किया । राष्ट्रीयता , देश प्रेम और जागरण के अनेक गीत प्रसाद के नाटकों और 'लहर' जैसे काव्य में विद्यमान है , चाहे वह 'अब जागो जीवन के प्रभात' कविता हो या 'अपलक जगती रहो एक रात', हो या फिर 'शेरसिंह का शस्त्र-समर्पण' । प्रसाद ने राष्ट्रीय भावों के साथ वैयाक्तिक प्रेम को जिस आदर्श के साथ जोड़ा है वह उनकी अपनी निपुणता है।

प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता और बिम्ब विधान तो प्रसाद की कविता के आसान उपादान है । इनकी योजना में कवि को लगना नही पड़ता। काव्य-प्रवाह के साथ वे स्वयं आते है और अपने अनूठेपन से प्रमाता को विस्मित कर जाते हैं। 'कामायनी' में प्रत्यभिज्ञा दर्शन की योजना होने से उसमे दार्शनिक शब्द प्रतीक भी आये हैं। जैसे – गोलक-अणु (ज्योतिर्पिंड), भूमा (परम शक्ति), चिति (शिव तत्व) आदि। स्वछंदतावादी प्रतीकों में प्रसाद ने अरुण-किरण (प्रसन्नता), आकाश (हृदय), ऊषा (आनंद),कमल ,कलिका, मुकुल (कोमल भावनायें या नव प्रेमिका), बसंत (यौवन), कोकिल (आशा), जलधर(मधुर कामना) और शशि-लेखा (कीर्ति) आदि का उपयोग किया है। इसी प्रकार जिन परम्परावादी प्रतीको का अधिकाधिक उपयोग कवि ने किया है वे इस प्रकार हैं – नाव (जीवन), रात्रि (अन्धकार), भ्रमर (अभिलाषा), दीप शिखा (प्राण ज्योति), कुटिया (जीवन), पथिक (साधक), प्रेमी (भटका हुआ), सागर (परमात्मा या संसार) आदि। प्रसाद की चित्रात्मकता को दर्शाने के लिए 'कामायनी' में श्रद्धा के सौंदर्य –वर्णन का यह दृश्य ही यथेष्ट है[2] -

नील परिधान बीच सुकुमार खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,

खिला हो ज्यों बिजली का फूल मेघवन बीच गुलाबी रंग ।

आह वह मुख पश्चिम के व्योम बीच जब घिरते हों घनश्याम,

अरूण रवि-मंडल उनको भेद दिखाई देता हो छविधाम ।

प्रसाद की बिम्ब योजना उनकी सभी रचनाओं में मुखर है । किन्तु 'लहर' में 'पेशोला' की प्रतिध्वनि ' का बिम्ब बहुत ही प्रभावपूर्ण है । इस कविता में निर्धूम भस्मरहित ज्वलन पिंड के अरुण-करुण बिंब का जो चित्रण किया गया है, वह प्रतीकात्मक तो है ही कवि ने इसमें अस्ताचलगामी सूर्य के ब्याज से भारतीय अस्तोन्मुख गौरव-गाथा का प्रतिबिंब उकेरना चाहा है । परोक्ष रूप से इस कविता में भारतीयों को प्रेरित किया गया है, जगाया गया है, उन्हें जागरण का संदेश दिया गया है। यहाँ कवि की ललकार चुनौती से भरी हुंकार के रूप में प्रतिफलित हुयी है।[5]

कौन लेगा भार यह ?

कौन विचलेगा नहीं ?

दुर्बलता इस अस्थिमांस की -

ठोंक कर लोहे से, परख कर वज्र से,

प्रलयोल्का खंड के निकष पर कस कर

चूर्ण अस्थि पुंज सा हँसेगा अट्टहास कौन ?

साधना पिशाचों की बिखर चूर-चूर होके

धूलि सी उड़ेगी किस दृप्त फूत्कार से

छायावाद का एक और आवश्यक अंग विशेषण-विपर्यय (Transferred epithet) अंगरेजी साहित्य से हिंदी में आया, ऐसी मान्यता है। इस अलंकार में किसी उपनाम (यहाँ पर विशेषण) को उसके उचित विशेष्य से अंतरित कर दूसरे शब्द से जोड़ दिया जाता है जो वाक्य में उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखता हो। सामान्य शब्दों में कहें तो यह कि एक स्वाभाविक विशेषण को अस्वाभाविक विशेष्य में लगा देना। जैसे – उसने नींद रहित रात गुजारी। यहाँ पर नींद रहित व्यक्ति है पर वाक्य से ऐसा लगता है मानो रात स्वयं निद्रा विहीन हो। हिन्दी साहित्य के वेसभी कवि जिन्हें छावडी कहा जाता हां उन्होंने विशेषण-विपर्यय का बहुलता से प्रयोग किया है। इनमे जिन अप्रत्याशित विशेषण-विशेष्यो का प्रयोग हुआ है उनमे से कुछ इस प्रकार है – स्वप्निल-मुस्कान, मृदु-आघात, मूक-कण, भग्न-दृश्य , नीरव-गान, तन्वंगी-गंगा, गीले-गान, मदिर-बाण, मुकुलित-नयन, सोई -वीणा इत्यादि। प्रसाद ने 'आंसू' काव्य का प्रारंभइस प्रकार किया है [7] –

इस करुणा-कलित हृदय में अब विकल रागिनी बजती ।

क्यो हा–हाकार स्वरों से वेदना असीम गरजती॥

उक्त पंक्तियों में रागिनी को विकल बताया गया है जो अस्वाभाविक है क्योंकि व्याकुल तो कवि का हृदय है । अतः यहाँ पर विशेषण में विपर्यय है। इस प्रकार हम पाते है की छायावाद की जितनी भी प्रवृत्तियां विद्वानों द्वारा बताई गयी है उनका पूर्ण समाहार प्रसाद के बहु-विध साहित्य में हुआ है। वे छायावाद को हिन्दी में लाये ही नहीं उसके साथ लम्बे समय तक साहचर्य किया और उसे अन्यतम ऊंचाइयों तक उठाया।

डॉ. नगेन्द्र के अनुसार कामायनी मानव चेतना के विकास का महाकाव्य है। कामायनी की प्रतीक रचना के संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण संकेत रचना के आरंभ में रचनाकार जयशंकर प्रसाद के निम्नलिखित कथन से मिलता है— "यह आख्यान इतना प्राचीन है कि इतिहास में रूपक का भी अद्‌भुत मिश्रण हो गया है। इसलिये मनु, श्रद्धा और इडा इत्यादि अपना ऐतिहासिक अस्तित्व रखते हुए, सांकेतिक अर्थ को भी अभिव्यक्त करें तो मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।"कामायनी के प्रतिकात्मक होने के संदर्भ में डॉ नगेंद्र की व्याख्या सर्वाधिक उपयुक्त मानी जाती है।उन्होनें कामायनी को कथारूपक (ऐलिगरी) के अर्थ में रूपक काव्य माना है। डॉ नगेंद्र कामायानी के प्रतीकों की व्याख्या निम्नलिखित पद्धति से करते हैं[9]—

(क) पात्रों के स्तर पर प्रतीकात्मकता

मनु - मनोमय कोश में स्थित जीव का प्रतीक

श्रद्धा- उदात्त भावना का प्रतीक

इड़ा - तर्क- बुद्धि की प्रतीक

आकुलि- किलात— आसुरी वृत्तियों के प्रतीक

देव- अबाध इंद्रिय-भोग के प्रतीक

श्रद्धा का पशु- दया, अहिंसा और करुणा का प्रतीक

वृषभ- धर्म का प्रतीक

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

(ख) घटनाओं के स्तर पर प्रतीकात्मकता

जल प्लावन की घटना प्रलय की प्रतीक

कैलाश पर्वत आनंद कोश या समरसता का प्रतीक

सारस्वत प्रदेश- विज्ञानमय कोश का प्रतीक

इसके अतिरिक्त डॉ॰ नामवर सिंह ने भी इसकी व्याख्या की है ।[17]

संदर्भ

[1], संभाषण, साहित्य भवन प्रा. लिमि., इलाहाबाद, पृ. 78
[2] सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', साहित्य में मिथक, संकल्प-2 : मिथक और भाषा विशेषांक (संपा. शंभुनाथ), हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कलकत्ता, पृ. 64
[3] वही, पृ. 65
[4] नामवर सिंह, कामायनी के प्रतीक नमक लेख, कामायनी : मूल्यांकन और मूल्यांकन (संपा. : इंद्रनाथ मदान), नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ.106
[5] रोलां बार्थ्स, माइथोलोजीज (अँग्रेजी अनुवाद – रिचर्ड हावर्ड और एन्नेत्त लावर्स, हिल एंड वैंग पाब्लिशर्स, लंदन, पृ. 109
[6] जयशंकर प्रसाद, आमुख : कामायनी, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, पृ. 4
[7] काव्य और कला तथा अन्य निबंध, प्रसाद प्रकाशन, प्रसाद मंदिर, वाराणसी, पृ. 61
[8] वही, पृ. 61
[9] वही, पृ. 61
[10] नंददुलारे वाजपेयी, आधुनिक साहित्य : सृजन और समीक्षा, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, पृ. 35
[11] गजानन माधव मुक्तिबोध, कामायनी एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, पृ. 16
[12] वही, पृ. 28
[13] फ्रांसिस शूमाकर, एस्थेटिक एक्सपीरिएंस एंड दि ह्यूमेनिटीज़ : मॉडर्न आइडियाज ऑफ एस्थेटिक एक्सपीरिएंस इन दि रीडिंग ऑफ वर्ल्ड लिट्रेचर, कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 65
[14] सूर्यप्रसाद दीक्षित, निराला रचित राम की शक्तिपूजा : भाष्य, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, पृ. 25
[15] वागीश शुक्ल, छन्द-छन्द पर कुंकुम, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, भूमिका – पृ. xlii-xliii.
[16] वही, पृ. xiv.
[17] गजानन माधव मुक्तिबोध, कामायनी एक पुनर्विचार, राजकमल प्रकाशन, पृ. 13

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com